

आर्य समाज

321







|                      |  |
|----------------------|--|
| उद्दिष्ट कार्यवृत्ति |  |
| 321                  |  |
| ASHA ARCHIVES        |  |



॥ दिक्का ॥ ॐ नमः श्रीवक्त्रसत्त्वाय ॥ ॥ दिक्का विधानमाह ॥ द्वापयुन  
॥ १ ॥ प्रका विधिमाह ॥ कल ॥ सग्वन ॥ मग वलिरु वग ॥ पंचगव्य  
॥ बाहिनपाय ॥ आदि भूत  
य ॥ आदो हूर्या घगुनम  
पंचगव्यसाधन ॥ आदि प्र  
निसाधन ॥ आदिसमय मधुलथिल ॥ मुनि ॥ प्रिसमाधि ॥ कल  
॥ प्रका ॥ वलिविय ॥ वाक्प्रका ॥ भिव्यगध दूग वीन ॥ लसयाइ

॥ गृत् ॥  
॥ १ ॥



नकार्य ॥ पुनर्मधुलदनकमगप्रजा ॥ पंचगव्यविय ॥ रावना ॥ नि  
शङ्कन ॥ लाहाग्निनकाथकालिर्ननत्तमधुलवायक ॥ प्रजापार्य  
॥ नत्तमधुलयाखकने ॥ १ ॥ अर्ध्वमिहनाधत्वंमसा  
शामहाविराः ४ मर्वसत्त्वान्मीमा नमागनादध्वमहायानि  
प्रतिष्ठापनार्थयुष्माकंप्रजना यच दध्मिहिकपनिपूच  
नार्थमहामधुलंपवर्त्तनंवाहामवाकनिष्यामि ॥ युष्माहिर्यत्क  
र्त्तव्यं नत्कर्त्तव्यं ४ मिः ॥ ध्याखकने ॥ नत्तमधुलदाहत्तप ॥ गा







ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॥ अथाष्टिपुत्रविधिमाह ॥ कलठा  
सुधेन नागपद्मगन्धालिङ्गोपवेशनव्यपार ॥ अमाघपाठनाके  
ठ्वनादिस्थापनायाय ॥ ॥ आदोसर्गार्घ्यगुणमधु  
तपश्चरगव्यदाधनसिन्धुनग  
त्रिसन्नाधि ॥ कलठा आदिपुत्रा  
गन्धपिनागुपुमधुलदनके ॥ मन्त्रपुत्रा ॥ लोचना ॥ लाहानिपुत्रानि  
नाश्रुन ॥ पश्चरगव्यविये ॥ बृद्धधर्मसंघनधुलस्वर्गलिपलवाय



॥ दि आ ॥

॥ ३ ॥

॥ अमाघपाठमधुलकासपलसाय ॥ अमाघपाठमधुलकास्वान

सायक ॥ ॐ अमाघपाठमधुलसर्वविद्यानूत्सायक ॥ ॐ अमाघपा

ठालाकैवनायवज्रपूष्यं प्रति

कुस्वाहा ॥ मध्यम ॥ ॐ जि

ह्निलोकविजयाय अमाघपा

ठप्रतिहर्गर्जाहवज्रपू

ष्यं प्रति कुस्वाहा ॥ ज्ञातेन ॥

ॐ अमाघपाठालाकैवना

यवज्रपूष्यं प्रति कुस्वाहा ॥ ध्यातेन ॥ ॐ आर्यगानायवज्रपूष्यं प्रति

॥ ग्रन् ॥

कुस्वाहा ॥ स्वध्याते ॥ ॐ आर्यरुद्रोवज्रपूष्यं प्रति कुस्वाहा ॥ ज

॥ ३ ॥



अन॥ ॐ आर्य्य अमाघा कौं ॥ यवज्ञ पूष्यं प्रगिच्छ स्वाहा॥ जश  
काथुक्कन॥ ॐ आसूधना जायवज्ञ पूष्यं प्रगिच्छ स्वाहा॥ स्वश को  
कन॥ ॐ आर्य्य हय गिवायवज्ञ पूष्यं प्रगिच्छ स्वाहा॥ ज  
श थुक्कन॥ ॐ आर्य्य सर्वनि बर्हु विस्की रायवज्ञ पूष्य  
प्रगिच्छ स्वाहा॥ स्वश थुक्कन॥ ॐ आर्य्य हय शना जा  
यवज्ञ पूष्यं प्रगिच्छ स्वाहा॥ जश को थुक्कन॥ पूजास्तुति॥ लाकं ध  
नीमिनी ॥ अनी अमाघ गुहासागनी अमिगारुक्कनं मौलिनमा मो अ



॥ दिआ ॥

॥ ४ ॥

माघपासर्क ॥ श्रीकानसकृवनाथंकनूधस्त्रिग्वमानसं अमाघपा  
र्क्षीनामानंलाकनाथंनमाम्यहं ॥ ब्रह्ममधुलस ॥ स्वानवाय ॥ ॐ ब्रह्म  
धुलसर्वविघ्नानुत्कादहं ॥ ॥ ॐ शूर्यवनाचनायव  
इपूर्यप्रगिकुस्वाहा ॥ म ॥ ॥ ॐ शूर्यअकायायव  
इपूर्यप्रगिकुस्वाहा ॥ इ ॥ ॥ ॐ शूर्यनत्तसीकवाय  
वइपूर्यप्रगिकुस्वाहा ॥ ख ॥ ॥ ॐ शूर्यअमिगाणायवइपूर्य  
प्रगिकुस्वाहा ॥ थ ॥ ॥ ॐ शूर्यअमाघसिद्धियवइपूर्यप्रगिकु

॥ गुन ॥

॥ ४ ॥



स्वाहा॥~~जडा~~॥ ओं मा म की य व ज्ञ पू र्ण प्रणि कृ स्वाहा॥~~व अ थु का~~॥

ओं आर्य ना व नी य व ज्ञ पू र्ण प्रणि कृ स्वाहा॥~~ख अ थु का~~॥ ओं आर्य

पा धु ला य व ज्ञ पू र्ण प्रणि कृ

आर्य ना ना य व ज्ञ पू र्ण प्रणि

~~प र्ण प्रणि कृ स्वाहा॥~~ सु नि॥ ग

भि न र्ण प्र ष ड् व च व रू र्ण का म क्रा न्त वि र्ण वि न र्क द ष ना ग प्र च धु

अ र्ण॥ मा हा र्ण स्व र्ण नी न का ट न ष र्ण वि र्ण ना ग दा न र्ण प्र ष ड् म न्त

स्वाहा॥~~ज अ थु कू~~॥ ओं

कृ स्वाहा॥~~ज अ क थु कू~~॥

अ जि ज्ञा न म सि द्वि क र्ण



॥ दिआ ॥

॥ ५ ॥

वलनयस्मनिनीबुजायनस्मेनम॥ ७ ॥ साऽहं नवेनामा नवेदहि  
गायय ६० मदि वस्त्रपादाय यावदावाधिम धुनि यधुनाम् ॥ बुद्ध  
रुगवर्गमहाकानुधिकं सर्वं ॥ सर्वदक्षिर्गं सर्ववनरु  
यान्विर्गमहापूरुषं ॥ अरुध  
यं धनधी गच्छामि द्विपदाना  
धुलसस्त्रानवाय॥ ८ ॥ ॐ धर्ममधुलसर्वविघ्नानुत्कादहं ॥ ॐ आर्य  
प्रह्लापानमिगायवज्रपूर्यप्रगिकस्त्राहा ॥ ९ ॥ ॐ आर्यगन्ध

॥ गुरु ॥

॥ ५ ॥



ब्रूहाय वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~क्रीडा~~॥ ॐ आर्यदक्षरुमिका  
य वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~खडा~~॥ ॐ आर्यसमाधिना जाय वज्रपू  
र्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~धन~~॥ ॐ आ  
र्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~जडा~~॥ ॐ  
य वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~व~~  
था गगनगुह्यकाय वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~यडाथथक~~॥ ॐ आ  
र्यललिगविस्तनाय वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~जडाथथक~~॥ ॐ आ



॥ दि जा ॥ र्यस्वर्ध्रुप्रहायवज्रपूर्यप्रगिकुस्वाहा ॥ ~~पर्वानवचानपूजा~~ ॥ सु

॥ ६ ॥ मि ॥ याजात्यादिकइश्वरगणमहतीचक्रपर्वपाधिनीयवर्धधारुक्त

पंजनानन्दहनसत्वात्समाक

मूदननियसकृष्णइश्वार्ध्रु

यनहर्गधर्मायनस्मेनम॥

दक्षिणाख्ययं नन्दिबेसमूपादाययावदावाधिमधुनिरवधुना

ग ॥ धर्मनधंगकामिविनागानामयं ॥ ॥ धलिर्गमधुलस

वर्धनिः अगार्धचगगस

वार्धवृद्धाष्टक॥ च्युगा

७ ॥ सोऽहं वनामात्रव

॥ गृन् ॥

॥ ६ ॥



स्नानवाय ॥ ~~संयम~~ ~~मधुल~~ ~~सर्वविघ्नान्~~ ~~नृत्ता~~ ~~दहं~~ ॥ ॐ आर्यो वला कि न्धना  
य वज्र पूष्यं प्रनिकु स्वाहा ॥ ~~दध~~ ॥ ॐ आर्य मेधय न च नाम वा  
धिसत्वाय वज्र पूष्यं प्रनिकु स्वा  
जाय वज्र पूष्यं प्रनिकु स्वाहा ॥  
जाय वज्र पूष्यं प्रनिकु स्वाहा ॥  
नाम वा धिसत्वाय वज्र पूष्यं प्र  
र्य मंशु शा वाय वज्र पूष्यं प्रनिकु स्वाहा ॥ ~~स्वडा का ध~~ ॥ ॐ सर्वनि

ॐ आर्यो वला कि न्धना  
ॐ आर्य मेधय न च नाम वा  
हा ॥ ~~ज्ञान~~ ॥ ॐ गग धर्ग  
स्वडा ॥ ॐ आर्य समनर  
धन ॥ ॐ वज्र पाधय न च  
निकु स्वाहा ॥ ~~जडा~~ ॥ ॐ आ  
ॐ सर्वनि



॥ दिजा ॥  
॥ ७ ॥

वर्धुर्विस्कर्हि न च नाम वा धिसत्त्वाय वज्रपूर्य्यं प्रगिकृत्वा हा ॥ स्व  
अकाधूर्क ॥ ओं आर्य्य जिगिगर्श यन च नाम वा धिसत्त्वाय वज्रपूर्य्यं  
प्रगिकृत्वा हा ॥ ~~ज अ थ थूर्क ॥~~ ओं आर्य्य रव ग र्श यन च ना  
म वा धिसत्त्वाय वज्रपूर्य्यं प्रगिकृ  
चा प चान र्ज्जा ॥ रुगि ॥ चत्वा  
त्वाद विद्व य ॥ ४ चत्वा न ४ रुल स्किगा समन ना ॥ ४ नाम न हा योगी  
न ४ ४ ४ य ४ ४ वल पू र्जं लान् रुग व गा य स्मिग धपा कृ गी ॥ प्रह्ला क्षी

॥ ग्रन् ॥  
॥ ७ ॥



लसमाधिगफवपूषसीघायनस्मै नमः॥ ७ ॥ साऽहं भवनामा  
चर्वेदभिगात्रयः॥ मे दिवस मूपादाय यावदावाधिमधुनिख  
छुनाम्॥ अर्वेवर्लिकवाधिस त्वसैघसनर्धीगक्कामिग  
धनामयः॥ स मन्वाहन क्रुमादधदिगलाकधरु  
सैनिपनिगावृद्धारुगवन्ता वाधिसत्वाश्च आचोय्या  
पाध्याश्च अहमवनामायनकिशिरुकायवाकमनालिः॥ सर्व  
वृद्धवाधिसत्त्वान्मागापिगनो गदन्वान् सगम्ये॥ ह अन्मनि



॥ दिजा ॥

॥ ८ ॥

एवान्नैषू मया पापैर्कर्मकृते का विमोक्षदम् ॥ गत्सर्वमकध्वपिष्ठु यि  
त्वा कुर्वीयित्वा सर्ववृद्धि वाधित्त्वानामाचार्योऽस्यानिके अयया वलया प्र  
दत्तया प्रणिदधनया ज्ञानया स्म  
त्तमन्नाहर्नरुदनायथाग आ  
निपार्ते प्रणि विनगानि हस्तदक्ष  
वन्ना सर्वस्वेषूपाधिहर्नषू अन्नक्षकृत्पपि पीलिकाम्पाय ॥ सि ॥  
प्रवमवाहर्नैवला मूपादाय यावचना विगमिनीः यावच्च चंद्रसूर्यादि

धप्रणिच्छादयामि ॥ गु ॥

व्यं अहर्नया वद्धिर्वशाध

निहस्तक्ष्णः लज्जिनादया

॥ यन् ॥

॥ ८ ॥



यान्नः प्राधमिपार्गप्रहाधायप्राधमिपानाग्नप्रतिविनमामि४निह  
स्मदधुनिहस्मधरुणा४लङ्किनादयावन्नासर्वसत्त्वेषूप्राधिरुगवृश्र  
ना४४कूना४४पिपीलिकामूपा  
नागधनधामाचार्यधमहना  
यैश्रुकनामि४॥ गु॥ पुननपा  
गआर्याश्रुहनायावङ्गीर्वैश्रुदरुदानैश्रुवत्तचर्यमृखावादीसूना  
मेवयमयप्रमादस्मानैश्रुगगीगवादिगैमालागन्धविलपनैवधरुक

दाय॥ पुवनचावाहप्रथम  
ः शिष्यमनूशिष्यमनूविधि  
नसमन्वाहजैरुदनायथा



॥ दिशा ॥

॥ ६ ॥

रूपधधनधीउच्चलयनेमहालयनशुक्लालङ्कारनेप्रहायशुक्लालङ्कार  
नागप्रगिविनगा॥ सि ॥ १ ॥ पूर्वमवाहेशुभकनामाष्टमीभवन्नुपादाय  
यावच्चन्द्रसूर्यादियान्कनशुद्ध  
स्नानामेषयमद्यप्रमादस्नानेन  
स्पर्शनवर्धुकेरूपधधनधीउच्च  
राजनान्प्रगिविनमानि॥ अननाहप्रथमनागधनवीमार्याधामहगा  
भिक्षामन्त्रभिव्यमन्त्रविधीयन्शुभकनामि॥ ॥ अर्घ्य ॥ ॐ नमः

॥ ग्रन् ॥

॥ ६ ॥



सिनिश्कनश्पचश्हनश्हाश्हीश्हंश् ॐ कानवृष्ण वधधनश्  
धिनिश् धुनश्गनश्वनश्मनश्नस्मिनसगसहसुपनिर्महिग  
सनिनक्षत्रश्गपश्रुगवन सामादिन्ययमवचृधकु  
व्यनवृष्णद्वजपिदवगाथर्वि गचनधकमलायभूध  
प्रगिकृत्वाहा ॥ ॥ वृत्तका ~~साधन~~ ॐ सनश्हनश्  
रुगवनधनश्समयमनस्मनहं हं रुद्ररुद्रस्वाहा ॥ ३ ॥ नि  
~~कृत्वा स्वाहा वाय ॥ ॐ नमानन्नयाय ॥ ॐ नमा आर्यावला~~



॥ दिशा ॥

॥ १० ॥

किं न धनाय वाधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकान्तिकाय ~~मद्यथा~~ ॥ ३० ॥

अमाघभीलमहाभील शुभ्रसत्त्वरुन २ सैरुन २ पद्मविरु विगुरुजंग

धनाय समन्तावला किं न धनाय

ॐ आ ४ हं स्वाहा ॥ २१ ॥ व

सिखिय ॥ ॐ अमाघपा ४ ॥ ४

सर्व इष्ट समय मूडा प्ररु

उकधर्म एव स मूह कानो ४

निपुष्टी वन ४ न आ कुरु

स्वस्ति स्वाहा ॥

~~॥ वाज प्रजा ॥ मधुलक्षि ॥ रुगि ॥ आभीर्वाद ॥ ३~~

~~महाद्रयाय ॥ मधुलया खानवा गास गय ॥ विरु प्रजा द अ ४ ॥ किरु~~

॥ ग्रन् ॥

॥ १० ॥



[illegible]



॥ दिआ ॥ ~~धुनः परमेश्वरगव्यः ॥ धनः ॥ कुरु ॥ आदि प्रजाः सिंधुनगयः दवप्रणिपा~~  
 ॥ ११ ॥ ~~दप्रजा ॥ अंजनसाधन ॥ आदिसमय ॥ नानाज्ञाय ॥ मधुनविभ ॥ सुनि ॥~~  
~~नदिनमस्कान ॥ विसर्जन ॥ वि~~ ~~समाधि ॥ उपाध्यानं ॥ किनेष्ट~~  
~~आ ॥ किनेगाय ॥ मीकल ॥ ४ ॥~~ ~~कालसम्पन्नमगमकुरुदि~~  
~~प्रजा ॥ धीनिदेवप्रजा ॥ धीनिम~~ ~~धुलविधित्थप्रजा ॥ ४मसा~~  
~~नवलिः ॥ धुनिधुनकाता ॥ पहाअयाता ॥ अमाघमा ॥ लोका ॥ धनया ॥ धक~~  
~~धानमधुनचाय ॥ दनका ॥ नकल ॥ कासान ॥ गुनमधुन ॥ न~~

॥ ग्र ॥

॥ ११ ॥



~~कदा न न ह्युत्तरजा ॥ धूलिधूनज ॥ क्षिप्रपिङ्गवामः गुणमधुलदन~~  
~~क ॥ धूलिस्वकन ॥~~ गजक्षिप्रमर्कदो वक्रवान् कृगमधुलान् सप्रव्याज

लिन ॥ न हला कस्य दयार्थनापि  
गथाग न काय संपन्न प्राक्तयः  
सस्य दय वर्य सत्स्य नि नी क्षाव

पनलाकास्य दयाय किन्तु  
मधुल प्रवक्ष्य कार्य ४ गथा  
यित्वा ~~सवना~~ ॥ स्वमनीनः

मुखन प्रविक्ष्य वज्रा निर्गस्य प्रज्ञापन्न स्थान हृद्वाज किन धा कृष्ट ४ म  
प्रज्ञा गथाग न ईवीरुगेन रिषिकान् ॥ श्रीसननूपनध्यात्वा मधुलस्य



...

॥ १२ ॥



क्विरुवर्जिनी॥संप्राप्तास्मान्मनुष्यवक्त्रमनुष्यरावने॥मनुष्यप्रयागम  
नुष्यवयनरुग्महावली॥मालसैन्यमहाधाने॥असिहादिरिवले॥

॥लाकानुवर्तिमागम्यचक्रप्र  
मिमावत्सकुनसर्वरूपाकथ  
यधीसर्वस्वगिदिक्षामघ॥अनु

ददममः॥~~गुणिनिःपाथयग॥पुनचध्वयना॥~~चक्रवैवरुसत्स  
कंदत्तानाथवदस्वम॥चक्रदवगयास्तत्तमाचार्यपनिकर्मच॥समय

वर्तिनवर्गा॥गत्मात्मनि  
सि॥१०॥गगानत्तत्रयस्यम  
मादजगत्सु॥११॥वृद्धवा॥



॥ दिजा ॥

॥ १३ ॥

सर्वब्रह्मानीसम्बर्णगुणमजमं ॥ आचार्य ४ स्यामहं निर्यसर्वमन्वा  
र्थकान्धाम् ॥ ~~मन्वावाधिवि~~ ~~साम्बर्णकान्धाम्~~ ॥ समन्वाहनन्तुमा  
ब्रह्मवाधिसत्त्वा अहं मन्वा  
ययावदावाधिमन्तुलनियधु  
वाधिविरुमन्तुलनं ॥ यथा  
गनिध्वयध ॥ ७ ॥ त्रिविधाशीलभीष्याश्च कुलधर्मसंयहं ॥ सत्त्वा  
र्थश्च क्रियाशीलप्रगिरुद्राम्पहं दृढं ॥ ब्रह्मधर्मश्च सर्वचिन्त

॥ गुरु ॥

॥ १३ ॥



यमनूरुनः अशाल्यधगृहिष्यामिसम्बनेवृद्धयागर्ज ॥ वक्रघट्टचम  
 डाशप्रगिगृह्णामिगत्तग ॥ आचार्यशरगृहिष्यामिमहावक्रकुली  
 चय ॥ चतुर्दानमृदास्यामिवह्नु  
 तयाल्पसमयकुमनानम ॥ स  
 र्गप्रियानकः महापद्मकुलेशु  
 नैसर्वसंयुक्तैप्रगिगृह्णामिसर्वग ॥ वृजाकर्मयथासत्कामहाकर्म  
 कुलाच्चय ॥ उत्पादयित्वापनमैवाधिविचिरुमनूरुनै ॥ गृहित्वासम

त्वातुदिनदिन ॥ महानतकु  
 र्ममृगिगृह्णामिवाश्रय  
 इमहावाधिसमूहवा ॥ सम्ब



॥ दिक्का ॥ नैकं सर्वसत्त्वार्थकान् ॥ अग्निर्हस्ता नयिष्यामि अमृता  
 ॥ १४ ॥ माचयाम्यहं ॥ अहं हस्ता हस्ता नयिष्यामि सर्वसत्त्वान् स्थापयामि  
 ब्रह्म ॥ गंगा इमं गङ्गा कुलमि  
 हं रुद्र ॥ ॥ रावना ॥ गङ्गा ह  
 पनिसूर्यो सूर्य चन्द्र स्था निसूर्य  
 शुक्रानि ॥ हं ॥ आ ॥ ओं ॥ अङ्गनाधिचिन्तयित्वा गान्धर्वान् यनहन्त  
 हस्तिनाधिगन्धर्वकवजयुक्तं न सव्यमुखिनाः हं आ ॥ ओं ॥ अङ्गनाधिचिन्तयित्वा गान्धर्वान् यनहन्त

॥ ग्रन्थ ॥

॥ १४ ॥



<sup>मन्त्रद्वारा प्रदत्त</sup>  
<sup>लक्षणानामर्थे</sup>  
<sup>विशेषात् तस्य तन्त्रे</sup>  
~~धनितकंद्याम् ॥~~ ॥ अथ पूष्य धूप दीप दद्यात् ॥ ॥ गदम् ४४  
 क्वादिदनाकाष्टनद्यादम् ॥ गुंलं ॥ ॐ वेङ्कटासहं ॥ ~~॥ निमन्त्रे ॥~~ ॥  
 गमवलाकयन्तानि नयन्त  
~~स्वन्नं ॥~~ ॥ गंगा वीकानां  
 चतुर्कण्यं ॥ ॐ श्री ४ विसृज्य  
 धय सर्व विकल्पान्नपनयहं ॥ ~~॥ निमन्त्रे ॥~~ ॥ गंगा  
 अष्टमी वगसूय मवनाहयम् ॥ ~~गदन्ति व्यस्यन्ती न प्रमार्त्तनक~~



॥ दिजा ॥

॥ १५ ॥

~~सुखं विष्णुभीकर्म हं अं न न सर्वकृमा च स न ज न शि य न्कि कर्म~~  
~~॥ अं वृद्ध मे यी न ज २ त र्वा स्वाहा ॥ अं न न स व वा सी न द्वा द द्या म्~~  
~~॥ स्व स्वा स न तं नि व ४ ॥ अ न~~ क क ल्प को टि रि र्य क्क र्ग पा  
प पु नाः ग स र्व हि ज य या मि द्वा म धु ल मी द्वा ॥ उत्स न्ना  
इ र्ज मि स्त र्वा स र्व इ ४ र व स्य स र्क वा य र्वा च र्य व न श्मि न्म  
मि न र्प न न नि र्म ला ॥ अ श य र्वा शि न दु ला ला र्ग ल द्वा म हा त्म मि  
४ ॥ य न य र्य जि न स र्व ४ त पु र्ण नि ह ४ ॥ स न ॥ स र्व प नि गृ हि ना ४ ॥ स्तु

॥ पुन ॥

॥ १५ ॥



जायमानामहात्मसि ४॥ न नयूर्यमहायानसूजानाहिरुविष्यथ ॥

अथमार्गवनक्षीमान्महायानमहादयः ४ यूनयूर्यगमिष्यन्तारु

विष्यथनथागन ॥ ~~मिथ्याव~~

मिथ्या ॥ ॥ ॐ धी ४ ॥ वज्र

नीकृषी ॥ ~~मिमलेक्षकृषवा~~

लूकंदयाकिप्याय ॥ गन

~~कृषीमनुकपिवापामसु~~

स्वप्नकथयिष्यत्थस्वः रि

~~वाय कृषगमा नोदनेमधुलरुमिषय नैयमनिकात्यनानेइत्यज~~

~~विहाअर्याथीस्वापयग ॥ गनोमधुलगृहगत्वापय्यादिरि ४ सुवि~~



॥ दिक्का ॥ ~~कन्यामधुतविमर्जयदिगिजिष्याधिवाननविधि~~ ॥ ~~मन्दनयुन~~

॥ १६ ॥ ~~४ प्रसूयवलिंदखामधुतगृहानि ४ निर्वृत्तमिष्यात्स्वर्गपृष्ठागि~~

~~नियामादिमूनिगा ४ स्वप्न~~ ~~कृत्तुलीनकृत्तानक्र~~ ॥

॥ नग ४ आचार्य ४ समाधि

प्रयत्नकले ४ अनन्दवशात्

मधुवाधिवाननादिविधिक्क

व्याम् ॥ ॥ मधुनरु

~~प्रदक्षिणासिधिये ४~~ ॥ ॐ प्रविशतु रगवनमहामाजपुनसर्वसि

॥ गुरु ॥

द्विस्त्रवप्रदपनमस्त्रवारुमसिद्ध्यर्थ ४ ४ ह्वैवहा ४ प्रसिद्ध्यस्त्र

॥ १६ ॥

ॐ ४ ग ४ म ४ न ४ प ४ द ४ दे ४ वा  
या ता नु आ का ल मा ता नु मे त



त्साहिगः प्रविष्टः प्रहृदः अर्धः यः स्वर्गः ४॥ मूर्तिः ४॥ पश्चिमाक्षाने  
पुष्कित्वा मधुलस्य प्रवृद्धादि दानानि ॥ ॐ वज्राद्यादयः समयः प्रवक्ष्य  
यहं ॥ ~~ॐ निमः ० नू चायसः प्र~~ ~~व्यमात्मा ॥~~ ॐ पञ्चमः सुखा  
४यः सुललि विलासनमिगेने ~~मामिरुगेवर्नः ३४६ वंही~~  
४हि हि हि हि हि ४ प्रगिच्छुः ~~सुमा ३३ लिनाथहा ॥ निमि~~  
~~प्रासः ४६ लेपनः गृहीत्वा स्वस्ति नमि वद्धा ॥~~ ~~॥ अर्का ४६ मत्पादचिह्न~~  
त्वादनादि निधनः ४ पञ्च ४ ॥ महावज्रः समयः सत्त्वाः ५ आर्यः वज्राद्यतिष्ठमः



॥ दिआ ॥ सर्वरुमहासिद्धिमाह ॥ धर्माधिदेवग ॥ सर्ववज्रधनानां सा सिद्धिमा  
 ॥ ७७ ॥ पवमाज न ॥ निदयि ॥ ४४ ॥ धर्माधिदेवग ॥ सा सिद्धिमाह ॥ धर्माधिदेवग ॥ सर्ववज्रधनानां सा सिद्धिमा  
 अमरुगवन्महानां एव महान  
 आदिमूकस्तथा गग ॥ ४४ ॥ सम  
 त्वप्रसिद्धिमा ॥ सर्वरुममहासि  
 सिद्धि वज्रमहात्कर्या वज्रगर्ग्यमम ॥ सर्वसत्त्वामना व्यापि सर्वसत्त्व  
 दिक्किग ॥ सर्वसत्त्वपिगा चैव कामाग्र ॥ समयाग्रि धीयन सत्त्वन सत्त्वन

॥ गृन् ॥  
 ॥ ७७ ॥



प्रह्लापायात्मसुहृत्सुननसस्यनभनाथकामास्त्रपनिप्रनयन॥~~ॐ~~नि  
~~प्रदजि~~॥~~प्र~~निविम्वसमाधर्माश्रयाश्रुनाविलाश॥~~अ~~यथा  
नूरिलाप्याश्चहृदकर्मसम्पन्नानि॥~~ॐ~~निसुननसुहृत्प्रनि  
त्वकत्सपा॥~~ॐ~~निप०वर्ष०म  
॥~~न~~न॥~~सि~~इनाजनपूष्याकंदद्यात्॥~~न~~नामधुलागमचूर्ध्वकृत्प  
न्नराजनदद्यात्॥~~ॐ~~स्याचार्यप्रवक्ष्यविधि॥ ॥~~न~~नाविकालवला



॥ दिजा ॥ यां गुनर्मधुलं गृहनिर्गम्य शिष्यमाह्वय गुनर्मधुलं कावय ग ॥  
॥ १८ ॥ ग ॥ रचना ॥ ग ग शिष्यं वेनाचन नृप्यन वलं विग ॥ सार्वकर्मिकले  
जलाहिरिकै हलक धमि नसिव कपप्रचक्रसूर्यचन्द्रोपनि  
कुरु कुरु नक ॥ आशु शो कानेन मिप्रहास्वनमनीनेहं ॥  
आपा नी ॥ त्रिकाया धिष्ठान ॥ यश्च गव्य वस्तु ॥ ॐ सर्व  
गथा गगानरुन वाध्मलं काव पूजा मघस मूडरु न ॥ समयहं ॥  
क ग प निध्मन ॥ ॐ वज्र न कुरु ॥ क ग ग नीय ॥ ॥ ग गानत न ॥

॥ गुरु ॥

॥ १८ ॥



मुल जं हो के १

लेकानयीचा ॥ गहुन वकन जका जग इर्वाक धुकी न धार्घ न द्याग  
॥ <sup>सिलो वस्तु</sup> ~~॥ सिलो वस्तु ॥ पुगमानु ले च द्याग ॥~~ ॥ गम ४ भिष्य सिन्दु  
नगिलक कृत्वा ॥ ॐ वज्र स्त्री व <sup>हं</sup> ॥ कृता स्त्री प <sup>॥ ॐ</sup> ॥ ॐ  
चक्र वन्धन मान य हं ॥ ॥ <sup>मिम यु धे व द्वा ध प र</sup>  
॥ ॥ ॐ आ ४ खं वी न हं ॥ ६६ <sup>नि प ० न भिष्य मूळ य</sup>  
द्रामयग ॥ ॥ गृहीत पुष्य मु उ द र द जिर्ध सार्ध कर्मिक जलस्य  
जिर्ध कृत्वा धि वस्तु वज्र मूदि पद्म चक्र न्यस्त सूर्य च द्वा पनी







पनमनहस्पमहृलप्रविष्टायवक्तव्यंनचक्षुज्जागव्यंमिनिः॥ॐख  
 हृमनीहहं॥ ~~ॐनिपठनाकृत्य~~ ॐआ४खर्वीनहं॥ॐन्यननयम  
 निकात्यननप्रव४धः॥महास नरुहृसुगीव्यसुखाम  
 वडासत्वायसिद्धिर्मा॥ॐनि पार०नप्रदतिधायनीकृता  
 जनिमहृलस्यपूर्वधावलि <sup>आताजुनैठकारिजा</sup> <sup>गनो नकोतय २</sup> <sup>मोता ३३ १ मेरुका</sup> लाःपथप्रधामकावयग  
 ॥ ~~॥गीगप्रवीसरु॥~~ ~~मध्य॥~~ ॐसर्वगथागगपूजापस्त्रयात्मा  
 ननिर्यान्तयामिसर्वगथागगवडासत्वाधिष्मती॥ ~~॥पूर्व॥~~ ॐ



॥ दिजा ॥

॥ २० ॥

सर्वगथागगप्रजापस्त्रानायात्मानं निर्यान्तयामि सर्वगथागगवे  
भाचनाधिगिष्टमा ॥ २ ॥ ~~दक्षिण~~ ॥ ॐ सर्वगथागगप्रजापस्त्राया  
त्मानं निर्यान्तयामि सर्वग  
मा ॥ ३ ॥ ~~पश्चिम~~ ॥ ॐ सर्वग  
त्मानं निर्यान्तयामि सर्वग  
मा ॥ ४ ॥ ~~उत्तर~~ ॥ ॐ सर्वगथागगप्रजापस्त्रानायात्मानं निर्यान्त  
यामि ॐ सर्वगथागगवज्रकर्मकुरुस्व मा ॥ ५ ॥ ~~पुनर्पूर्व~~ ॥

॥ गुरु ॥

॥ २० ॥



मातां गुरुं मित्रं चैव प्रियं मम  
एतद्गुरुं तस्यैव तस्यैव २

पिं ३१ मे  
प २

॥ ॐ गुणवचनं पस्मानायात्मानं निर्व्याकृत्यामि सर्वसत्त्वप्रविश  
धार्थमात्मानं निर्व्याकृत्यामि ॥ ~~गुणवचनं पस्मानायात्मानं~~ ॥ गग ४ ॥ अर्च्यं सर्व  
गथागग कृत्यप्रविशस्तदहर्क  
नश्चाननत्वं त्वं गथागग सिद्धि  
सिद्धिं न च त्वयदं महद्वृत्तं  
याप्यथगि ॥ ॥ ~~गि न सिर्वं च त्वा घ द्वा वा दयं~~ ॥ अर्च्यं न समयावजम  
ध्वानं स्नानयद्यदित्त्वं निर्मकस्य चिद्गुणावयित्वा ॥ ॥ हदि







वमन्तव्याभागे विषमापनिहाने कालक्रिया कृत्वा न न क प न न स्वा  
दिनिवदन् ॥ ~~ॐ निसमयादकानविधिः~~ ॥ ~~॥ गदन्वावधेयवना~~  
॥ गग ४ स्त्रि न चिरावज्ञसत्त्व या गैरुदृष्टमालम्ब्यः ॥ मदिर  
निष्पन्नाननन नैश ४ कानेजा मिगारुनूपे निष्पाद्य ॥ म  
वैगथोगगाचाधिविष्टमाव जसत्त्वामे आवत्विगिवाच  
यित्वा गस्वदिलेजा गवज्ञाकचरु ४ कोष्ठापीनपृथ्वीमधुलेसूर्यनी  
लहं कार्त्तिसिनेसिवैरुवधु क्ववर्तुलकलभाकवान्धमधुलेचदधुक्



॥ २२ ॥

चन्द्रनक्षत्राः कार्त्तिकविश्वः स्वर्गदीपनम् रिद्धिरुकायवाकवशा

ॐ ह४ आ४कानश्चनक्रोय

साक्षीपिर्गनं पविधगनरु

नत्तमस्तु न नक्तु मे का न र्ध

॥ गुरु ॥

॥ २२ ॥



ता ५५। ५

घट्टावादयगु॥ ~~गीगनमाहं~~ ॥ लं ह ह दि व हं भिनमियी आं ॥ क  
॥ ॥ ॐ आ व ठ य स्ता न रु य न न न न ठ वान य २ हं ह ॥ आ मे ॥ ॥  
~~नि प ० न ठ न द्या मा व र्त्त य धा~~ न प न मा व ठ य ग ॥ ५ ॥ भू  
~~वा स न न नू पी गु नू ॥ भि ष्यी म~~ च व न न न ह दि क ना ॥ ॥  
~~ली नै वा म घ ट्टा वा द य ग ॥ ॐ~~ नि ष्ट म हा का धा व ठ य हं ॥  
धी ह नू का य वि घ्न ह वि श्या ना जा य धि म ह स्वा हा ॥ ॥ नि म द्रु षा सा  
~~य र्प प ० न स व्य क न ठ धू प य ग ॥~~ य धा वि ष्टा इ न नू त्प न नि न दा न स्या



॥ दिग्गा ॥

॥ २३ ॥

पनिवज्रसममनं न इपनिपीगप शस्त्रची कवजं न इपनिय ४ कानं  
न स्यापनिर्वनाचनेध्यात्वा गगनिवर्क्ये ग ॥ एवमावेक्ष्य विद्यमानं  
क्षिप्य स्पचिरुवज्रवीजनक्षि रिष्वाग्वजवी आत्मा कै सैवा  
यमानं जिज्ञाया शनकै आ ४ कानं च द्रुक् आत्मा मात्मा क  
लेध्यात्वा ४ कहिवज्रा नि कया न ॥ एवमं (४) सूरु मधुतं  
वास्वस्य पनमस्य वा कस्य सूर्यवद ग ॥ नदन्तवनिर्दुद वनी द्द इ क्षि  
रिना कस्य च द्द दीर्घ इ न का वय ग ॥ ॥ क्षिप्य नृजि वज्री ध्व

॥ ग्रन् ॥

॥ २३ ॥







॥ दिक्का ॥ प० स्वदक्षिणायका न विवात न्या विद्या न विविक्क्यो न ॥ ॥

॥ २४ ॥ ॥ स्वयं न धुली स म द्वा पा भिष्य प्रव शि म ॥ यथा प्र द्य न था वा रु

द व गा ना क ल क मा न ॥ या द ति

व र ण ड र न ॥ या द कृ न्पा न र ण

॥ ॥ मिता धन प र भिष्य प्रव श

ग मा ला या र्णा का न म लि गा या आ स्ना न ल घ प्र ष्य म क मा कृ ष्य न

क म प्र द द या न ॥ ग न्म धु ली म न सा प्र व ष्य रु ग व कि न सि प्र ष्य मा

त्रि र्द व द ष्य ल ग्ग य स्मि

व ष्य गा द ग स्पा लु म धु ल

विधि ॥ ॥ ग ग प्र व द र्हा

॥ ग व ॥

॥ २४ ॥



लासुवर्धुपुष्पनिजिपगु॥ ॥ ॐ गिष्ठवडादुतामरुवडाध्वना  
 मरुवहदयमधुनिगिष्ठिगसर्वसिद्धिभययकहं ह ह ह ह ह ह  
 आखंवीनहं यगिष्ठककुम्भाक  
~~नसुवर्धुपुष्पनिजिपगु॥~~ लिमं दलपुष्प ~~॥~~ मने म दलपुष्प ~~॥~~ नकने म दलपुष्प ~~॥~~ पानकने  
 गिमहामुद्रासिद्धिः ॥ लोचन  
 मागु उरुमः ॥ सिद्धिः ॥ मध्यमांगमध्यमासिद्धिः ॥ ॥ अथोरागुत्व  
 धनासिद्धिः ॥ विन्वस्यागिडनचिनागुसमीपे किप्रसिद्धिः ॥ देवनी

॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥



॥ दिशा ॥ कुसुमि यस्मान्काष्ठादिविष्णु दमास्मान्व्य ४ दयादवनायानन्येन  
॥ २५ ॥ नयदिगतिगदायस्यासन्नैर्ष्यं गत्कुलं गम्यतु वनि ॥ समस्तकृत्य  
विधिसिद्धि ४ पंचनखावहिपा गपून ४ जिप दानप्रयया  
वग ॥ गयचवहिपामश्रुद्रसि द्वि ४ ॥ वाश्ववर्तुलनखास  
वाश्ववजावलीवहिध्वनास्मिति द्वि ४ ॥ मधुर्लचास्मनदक्ष  
यग ॥ मत्तुजापानिराव्यगोमापाशप्रस्तावाक नसप्रवक्षनीय ४ मान्ध  
पटनैर्गृह्य ॥ गगस्तुर्ष्यं गृहीत्वा मालायामावह्य गोमाली ॥ उां प्रनि

॥ गृह ॥

॥ २५ ॥



गृह्णन्ते मिमं सत्त्व महावर्गिणः ० न क्षिप्यन्त्यपि न सिवन्धिया न॥

~~निमग्नानि विवर्तः॥~~ ॥ न दन्तश्चन्द्र क्षिप्यन्त्याधिपतिं तल्लोदने

रुने नश्यद्वयमक्षालो द्वयं वि

रावः॥ वेङ्कसत्त्वः स्वयं गः

यचक्षुः घाटनं तत्पनः॥ उद्या

टयति सर्वो जो वङ्कचक्षुः

नन्तुनैः॥ ओम् नान्वक्षः ४६३

४६३॥ ~~निमग्नानि विवर्तः॥~~

~~नमनयेत्॥~~ ॥ हं वङ्कपठ्यन्त्या दवमाना नामकथनं पूर्वकं म

धुलाधिपतिमालय सर्वदक्षयित्वा प्रप्यादिति ४६३ प्रश्नदक्षी ६॥



॥ दिजा ॥ दापयन् ॥ गु ॥ ॐ दं गत्स धुत्त प ॥ ॐ दं गत्स धुत्त प ॥ ॐ दं गत्स धुत्त प ॥ ॐ दं गत्स धुत्त प ॥  
 ॥ २६ ॥ कलजागाम्दामर्त्तनधित्तिः ॥ संपदासर्वसिद्धिनीसमयाग्राहविष्य  
 सिः ॥ वज्रपद्मागुलतिर्गमर्त्तन ॥ ॐ नाधर्न कर्त्तुः ॥ ॐ निपथि  
 ॥ वज्रमधुलमहामधुल ॥ प्रविशहो ॥ यागमधुलम  
 हामधुलदर्शिताहो ॥ गु ॥ ॐ मधुलमहामधुलदीप्तिना  
 ह ॥ हा ॥ हा ॥ हा ॥ ॐ निपाथयन् ॥ ॐ निषिष्य ॥ दर्शनात्मकप्रव  
 विधिः ॥ ॥ मदनुदकारिष्यकार्थगुनवदजिष्ठादत्ताः ॥ स्वत्ति

॥ गुन ॥

॥ २६ ॥



पविस्त् कर्षणामनस्त् गुन्मधुलकानयित्वा ॥ १० वाधिवडा

धवृद्धानायथादरुमहामह ॥ ममापिगधनाथयखवडाईददा

हिम ॥ ~~४४ निप ० नृपथयन~~

ऊसा लिखिगाष्टदलकमलापे

व्यसपत्नीकवडाधननृपविराव

व्यात ॥ ~~लोहानिबजा~~

वर्हिस्त् अगगान्विद्यादवीचरसप्रशमिव्याहिवकार्थ ॥ १० वृ

॥ ~~कादत~~ ॥ गगान

विष्टमदसूर्यउपविस्थसि

॥ ~~आना~~ निद्रिकायाधि

॥ नदनस्वहदीमयखेनानानादिग्व



॥ दिजा ॥

॥ ३७ ॥

ज्ञानां महिष्यकं दुःशगयाधायवर्जिधागुधकनायथादरुक्तथा

धामसहि ॥ ~~पुनर्जगताप्राथम्यम् ॥~~ ~~मेरुतागने ४ प्रश्नासमापने~~

महानागधदवीरुयः वेनाच

मागधनिर्गन्तुनदवधनीप

मटिनिस्त्रयगाननननद्वं वडा

ज्ञानसत्त्वारिन्नमहिर्विच्य ॥ पुनर्जगमूडादिमूर्तिरि ४ पत्रा नि

४ नृत्पगगधमापूर्यस्त्रिनेलाचनादिविद्यासहिनेक्यधजप

नवानेधकान्निवठ्यवडा

प्रमुखनप्रवसिने ॥ शिष्य

जागसप्रश्नाज्ञात्पनपे

॥ गुरु ॥

॥ ३७ ॥



गाकावस्तुवादिग ॥ गीगनृपपूष्यकंकमादिष्टउरि४कनकि  
सलपावर्जिगवाधिविचिन्नामृगपूष्यसिगकल्लोम्भसिष्यपञ्चानि  
४सृगमलिषिच्यमानेनूपवजा दिरिदविरि४सिष्यसुई  
सूटिकसंकाशनिर्मलध्यात्वा ॥ ॥ ~~सिष्यसिष्यसि~~  
~~नसंध्यत्वा४॥~~ ॥ यत्तज्जलस कलमत्तहदिस्त्रिगस्यस  
वोत्तकस्यवनधर्मकुलादिपस्यनिस्त्रयदायनहिगस्यमहासूख  
स्यगत्तज्जलरुवदुर्गेपनमारिष्यक ॥ लश्रीधनकाश्चनपनवगा



॥ दिजा ॥

॥ २८ ॥

रंस्त्रिलाकनार्थस्त्रिमलप्रहिद्यः ॥ वृद्धाविवृद्धान्चूजपत्रनक्षत्रम्  
मंलैरुवदुष्मणिकननवाद्यः ॥ कनापदिष्टः प्रबलस्त्वमाः ॥ रघोम  
स्त्रिलाकननदवप्रष्टः ॥ धर्मा रुमः ॥ धनिकनप्रजाना  
मन्मंगलैरुवदुष्मणिकननग वाद्यः ॥ सधर्मयूक्तः ॥ शुभ  
मंजैलाद्यः ॥ संधानृदवास्तन ददिधीयायः ॥ श्रीनिवास  
प्रवनागधानीमन्मंगलैरुवदुष्मणिकननगवाद्यः ॥ ~~धर्माध्यात्म~~  
~~कनैः ॥ दकस्त्रोके २ वद्यम् ॥~~ ॥ गदन्मिष्यस्यसि ॥ नसिपद्मरा

॥ २८ ॥

॥ २८ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

॥ ग ग हं जं हं कानाधि  
धानी ग ह्यनसत्त्व कीरु गंद  
कन गृही गवा धिचिरामृ  
गन गत्स्वराववडा ॥ ३॥ मह  
रिषि चामि सर्व गथा गगा  
रिष्य कं महावेंडी ग्रंथ भुक्



॥ दिशा ॥

॥ २५ ॥

कारि विवर्हं सतत्सं महमिगिप ० नलि विवर्ह ॥ आदर्शना ज्ञास्य

स्वरावः ॥ ~~०२ सुदकारि विवर्ह~~ ॥ ॥ ०३ लोकनाश्च मकुटं सर्वस्वार्थसा

धकदहि मकनु ॥ ॥ ०४ काना वज्रस

~~भूतस्वपिगवनी ॥ ॥ ०५ रावना ॥~~

धीज्ञानसत्त्वने की कर्मे नरुस्त्वग

विः च्यमानं रूपवजादिरि रूपनीयमानम जीलगी गिकेरावयग ॥

॥ ०६ कनकवस्त्रादि घटिगे नत्तसे रुववज्जीम कुगे गस्वराववज्जीम

त्वगुध ॥ ०७ धननग

आकानर्ज नत्तसे रुववपि

थागगदवीरि ०८ कुम्भेनलि

॥ ग्रन् ॥

॥ २५ ॥

॥ ०१ ॥



नमस्तत्र परं पश्यन्त आगते मर्मस्थितिं गमिष्यन्तु लोभविषिर्गन्तव्यं  
~~विमर्शिनश्च ललागन्तमाना अपि ॥~~ ॥ ॐ वज्रधर्मस्वनी अरिर्विचर  
हं ॥ नमः ॥ ॐ सत्त्ववज्री अरिः विशङ्क ॥ इव ॥ ॐ नमः  
वज्री अरिर्विशङ्क आशु दशिन  
विशङ्क जी ॥ पश्चिम ॥ ॥ ॐ धर्मवज्री अरिः  
ॐ कर्मवज्री अरिर्विशङ्क  
या ॥ इव ॥ ॥ इति मर्मस्थितिर्नमः ॥ सन्ताना अप्ययम् ॥ ॐ दन्तस  
र्ववृद्धानी ॥ धर्मवज्री अरिर्विशङ्क ॥ यस्मात्क प्रजना र्थाय मकुर पश्यन्तु



॥ दिजा ॥

॥ ३० ॥

लाह्वं ॥ ॐ सर्ववृद्धचुडामर्धिमहामकुटं प्रणिच्छहा ॥ अरिचक्रा

दि ॥ ॐ आवडमकुटारिषिधरहं सनमस्वमहो ॥ ॐ मिपठि चारिषिध

म ॥ ॥ ॐ वडरुप्यहा ॥ ॐ मिपठि चारिषिधरहं सनमस्वमहो ॥ ॐ मिपठि चारिषिध

वस्वरावी ॥ ॐ मिमकुटारिषिधरहं सनमस्वमहो ॥ ॐ मिपठि चारिषिध

मिमकुटारिषिधरहं सनमस्वमहो ॥ ॐ मिपठि चारिषिधरहं सनमस्वमहो ॥ ॐ मिपठि चारिषिध

॥ ममकुटारिषिधरहं सनमस्वमहो ॥ ॐ मिपठि चारिषिधरहं सनमस्वमहो ॥ ॐ मिपठि चारिषिध

विधायननिर्लिशरहं सनमस्वमहो ॥ ॐ मिपठि चारिषिधरहं सनमस्वमहो ॥ ॐ मिपठि चारिषिध

पत्ता विध

॥ गुरु ॥

॥ ३० ॥



मिगारुनूपेक्षानसत्त्वारिन्नभिष्यवर्जं चामिगारुत्मकं विचित्र्य ॥ अलि  
यकं महावज्रापादि ॥ ॥ अशारिषिकस्वमसिबुद्धं वर्जनामारिष  
कग ॥ ॥ दन्तसर्वबुद्धत्वं गङ्गा वज्रसिद्धय ॥ ॥ दन्त  
पथनसिष्यस्य हस्तधनिनीति वृद्धादगिषहस्तदयाग  
॥ ॥ प्रगवज्रधाम्नानममि गारुस्वरावसमृत्ताहमव  
यक्षानस्वरावं ॥ ॥ निवेष्टारिषक ॥ ॥ नदनगथास्वविनवन  
॥ प्रक्षपानमिनुपेक्ष ॥ ॥ सकंददस्वम ॥ यनप्राफनसर्ववृथाग्यस्मान



॥ दिङ्गा ॥

॥ ३१ ॥

हृद्गर्भं ॥ ~~रावना~~ ॥ सर्वखड्ग आभा घसिञ्जि नूपं ह्मानसत्वारिन्नं यथा च  
मा घसिञ्जि पनिघमा विहावयन् ॥ ~~अरिष्य कथादि~~ ॥ ॐ वज्राधिप गिरि  
महि विभ्रम मिनि वदन् समय च्छंहा ॥ ॐ वज्र घट्ट भू ॥ ॐ  
गृहीता सिमयारु गवन्मयि सन्नि हि नारुवः ॥ ~~गुणि पठन~~  
~~वैकुण्ठानन्द~~ ॥ ॥ कृष्णानुष्टुप् ह्मानं भूमा घ  
सिञ्जि स्वरुवं धूय गा कः नारिन्नं ॥ ~~गुणि घट्ट~~ ॥ ~~अरिष्य~~ ॥  
यथा वा धिवज्रं ~~अरिष्य~~ ॥ ~~रावना~~ ॥ ॐ चक्रं वैनाचन नूपं ह्मान

॥ गुरु ॥

॥ ३१ ॥







गणवक्ष ४

॥ दिज्ञा ॥ वज्रसत्त्वस्य ॥ भूक्षारस्य ॥ वनाचनस्य ॥ नत्तसंरुक्स्य ॥ भूमिगारस्य ॥ भूमाधसिद्ध ॥  
॥ ३२ ॥ अनूपमवज्र ॥ हासवज्र ॥ उांकानवज्र ॥ नत्तरेड ॥ योगावज्र ॥ भूमाधवज्र ॥  
सूनगवज्र ॥ विलासवज्र ॥ ठाधगवज्र ॥ चिन्नामशिवज्र ॥ भूत्ताकिगवज्र ॥ पनमाधवज्र ॥  
विजयवज्र ॥ नगिवज्र ॥ गथा ॥ खवज्र ॥ धर्मवज्र ॥ समयवज्र ॥  
भूत्तलवज्र ॥ लीलावज्र ॥ मायावज्र ॥ गगलवज्र ॥ पद्मवज्र ॥ पानमिगावज्रा ॥  
सत्त्ववज्र ॥ स्वयंरुवज्र ॥ वृद्धवज्र ॥ नगीवज्र ॥ वज्राकुलवज्र ॥ कर्मवज्र ॥ ॥ ३२ ॥  
महासुखवज्र ॥ दंघवज्र ॥ नूपवज्र ॥ मार्गधुवज्र ॥ पद्माकुलवज्र ॥ भूनीसवज्र ॥ ॥ ३२ ॥



अननकवडा ॥ हनुकवडा ॥ कायवडा ॥ रास्कनवडा ॥ सुगीकुलवडा ॥ स्पर्धवडा ॥ ॥

ज्ञानवडा ॥ चिरुवडा ॥ ॥ मानवडा ॥ कर्णधकलवडा ॥ छुधनवडा ॥

सहजवडा ॥ हुंकानवडा ॥ ॥

॥ अकार्यवडा ॥

वडासुखी ॥ अकार्यसुखी ॥ वेनाचनसुखी ॥ नतसंरुवसुखी ॥ अमिगारुखी ॥ अमायसिजिसुखी

वडावंग ॥ वडननाम्मा ॥ वडाठाकिनी ॥ वडाहाना ॥ वडनाग ॥ ॥ वडागर्ला ॥ ॥

वडाविलासिनी ॥ वडाहम्मा ॥ वडागुनी ॥ वडास्वासा ॥ वडागीगा ॥ ॥ वडमाया ॥



॥ दिशा ॥ वज्रमहा ॥ वज्रावली ॥ वज्राला ॥ वज्राला ॥ वज्राहस्ता ॥ वज्रवृत्ता ॥

॥ ३३ ॥ वज्रकाकना ॥ वज्रकला ॥ वज्रलोचना ॥ वज्रमाला ॥ वज्रवर्मा ॥ वज्रना ॥

॥ वज्रमना ॥ वज्रमामी ॥ माहनमि ॥ वज्रका ॥ वज्रममी ॥ वज्रनर्मिनी

वज्रपद्मा ॥ वज्रनमि ॥ ॥ आका ॥ वज्रहस्ता ॥ समयवज्रा

वज्रमाला ॥ ॥ वज्रपांशुना ॥ वज्रनमि ॥

वज्रादया ॥ ॥ नागनमि ॥

॥ ग्र ॥

॥ ३३ ॥



सुविशुद्धधर्मधरुहानैवनाचनस्वराव॥ पेशरुहानविशुद्धासापेशसका  
फिकानधाम्॥ अविद्यापदमायेशरुहानानिलरुगकामा॥ ~~वृत्तिनामाति~~

~~यक४॥~~ गु॥ ~~जुग~~ मालादकम  
यकाउचन॥ ~~जुलि~~ नरिथके४

नुया४॥ ~~खवन~~ व्याख्यानमनुगनु

॥ ॥ नगरी ~~मिष्य~~ दरुदजिधकगाम्भरि॥ ~~वजा~~ चार्यारिथकीरा  
मयैदहि कृपानिधि स्वपनार्थ४ समर्थस्मो यनाहं त्वत्प्रसादन४॥

कुरुवज्रयधनामायठरि  
सिकु४ ~~मिष्य~~ क्रियाचार्यन  
साधनसधिकुगारुवनि॥



॥ दिआ ॥

॥ ३४ ॥

निप०त्वाः॥

॥ रावना ॥

गुर्वध्वष॥

॥ कनवनी वडा हं वडा सत्वन

पं०त्वा॥ शिव्यं सर्वो लंकानरुषि उक्तिं कुरु यधुगपगा कालं कर्म

पूर्वदाभसिहासनस्य विचित्रा

दलकमलापनि वडा स

त्वनप०त्वा लव्य॥ अ० गो० स० म०

॥ न० गो० हं कानजी वडा व

डा सत्वनपं०त्वा॥ भूनादिनी

धनसत्वा वडा सत्वा महान

ग० ॥ समीरुड सर्वात्मा वडा गर्गपनि ४पनि ४॥ पनद्यसूखारुगवान्

॥ ग० ॥

॥ निप० न० गत्वनय॥ हय० ॥ नि वडा स० मय० ॥ ॥ न० गो० घ०

॥ ३४ ॥



आकाशं ज्ञात्वा ॥ ४४ ॥ यथा सर्ववृक्षानां घट्टाद्यान्नागमस्मृता  
॥ त्वयापि हि सुदोषाभ्यां वाधिनयाजिनमना ॥ ~~४५ निप० न स चेन~~

~~अहयग ॥~~ ॥ चतुनक्षत्रिणिधर्मस्कन्ध ४ गसहस्रदश

नानिदानगथागमादिरित्याजनायसुधनिघट्टसमय

४ ॥ स्वरावशुक्लाहिरवः ४ स्वरावेर्विरुवाकगः ४ ॥ स्वराव

शुक्ल ४ सत्सत्क्रियणपनमारुवः ४ ॥ ~~४५ निप० न घट्टावावयग ॥ अ~~

~~लिंगनाशिनयकाययग ॥~~ ॥ मूडाहिसमयप्राक्कामनामूर्ति



॥ दिजा ॥ दृढत्वगः ॥ सर्वमूर्तिदृढाय नमः ॥ नमः प्राप्रकिर्लिभा ॥ ह्यानमूडामधि  
 ॥ ३५ ॥ शायसर्वकामा परागगः ॥ सर्वाः सिद्धिः साधयति प्रणिपाद्यवज्र  
 सत्त्वमूर्तिः ॥ ~~नमि वि समयदा~~ नविधि ॥ चना समयदश  
 ॥ ~~न इकी पनमाय मनु~~ ॥ वज्रसत्त्वनसंयः शंयध  
 धर्मिवायच समयनमहाम् डामधिष्टाय हृदा जप  
 ॥ ~~स्वना~~ ॥ स्वहृद्दीज विर्गगदवगाह नदेनाकाशस्थे नरि विच्यमा ॥ ग्रन् ॥  
 नविचिन्त्य ॥ ~~स्वा~~ दकना रि विचन ॥ अरिष्य केम हावज्जै वैधः रुक ॥ ३५ ॥



सत्यं नित्यं कृतं नित्यं

महोदधि नित्यं कृतं नित्यं

नमस्कृतं॥ ददामि सर्ववृद्धानां त्रिगुणालयसंरुवं॥ ॐ सर्वग  
अगमो लिख्यकसमं त्रिधं॥ ~~लेनामनिलकं~~॥ ॐ सप्रनिखीन  
वज्रं स्वाहा॥ ~~ॐ निप० न॥~~ पू ~~पं लो चं रुनि॥~~ ॥ गथा  
वीर्यं॥ ॥ पादित्यानुसमा ~~या ग्व प्रह्ला वे धा उ ४५~~  
दिको॥ घ ६५ वज्रसमायाग ~~दाचार्य सचने मर्ग॥ म~~  
छुलं पद्ममिर्यकं मनीमधुलमूरुमं॥ कृदागममिनिश्चनं चिरु  
कृटसमुकुर्यं॥ देवगागत्वं संपग॥ पक्षस्कन्धाः समासनपक्ष



॥ दिङ्गा ॥

॥ ३६ ॥

ब्रह्मा ४ प्रकल्पि ४ ॥ ४४ ॥ यवे वर्ध्या रि धका पनना मा रि धक ४ ॥ ४५ ॥

यथा ॥ मनु स क प न र्ज्ञाने द हि म ति जि दा य क ॥ ॥ ४६ ॥ नि प ० न ॥

यथा ॥ ॥ ग ग स्व य सा ष ४ ग ज फं जि ज फं वा द द या दि

क म नु ॥ ग गा भू सि म या रु ग व न् स्मि म पि न्नी नि हि गारु व

॥ ४७ ॥ नि व द न् नि ष्या न्द द्या न् ॥ ॥ नि ष्या पि न्नी नि ॥

सि म या रु ग व न् म यि त् नि हि गारु व ॥ ४८ ॥ नि प ० न नृ हि त्वा ज प न् ॥

॥ नि ष्य त् स ह ग पे ४ न् न्या पि सि जि वी जा ध ना य प न मा र्थ म नु सि

॥ गृ ॥

॥ ३६ ॥



द्विर्जयुधयन् ॥ ~~प्रणिमन्तुप्रदानविधि~~ ॥ न न ४ सूव ६ न ज न ग ४  
 न न्य स न घृ न म ध ३ न न ह म स ला क या ॥ ~~शिष्य स च श वा प्रा का न~~  
~~वा~~ ॥ ॐ व ज न या प ह न प द ल जी ४ ॥ ~~प्रणिम ० न ३ य न~~  
 ॥ ॥ <sup>उ ३ न न ३ न ३ न</sup> अ स्नाने पटल वत्स अ प नी न जि ने स व ॥ स ला का व  
 द्य ना ऊ न य था ला क स्य न मि ने ॥ अ स्नाने पट ला य न य ना य  
 दिव्य च श न रि य स्य न य ॥ ~~प्रस ३ न विधि~~ ॥ <sup>न ३</sup> न ना द प्य ६ मा दा य  
 का न ६ म लि ने द र्श य न् शिष्य ॥ प्र नि वि म्ब स मा ध र्मा अ क्का शु भ्रा श



यामि॥ ॐ निप० गा विष्णुर्वधनवृद्ध्या चतु० दिशुत्त्वान० ४४ ना० ४ ऊ० फ

सरधनु विषय

॥ ॐ ॥



व्याजक उर्ध्व मध्यापन उक्तैः प्रस्थापन समाख्याना उपाया गुह्य  
 वास्तु ४॥ मनस्सु सह ज्ञेय रव्याना विद्वि विकल्पना क्षनं ॥ चतुर्मान वि  
 जया कुम्भ न धर्म धातु लज्ज प्र  
 जप ४॥ ~~मिदं शास्त्रं~~ ॥  
 मन ४ का लु पद्य दिशि विजनी  
 लीका नयन ॥ गद न भि व्यस्य च शवि सान्ध पटन्दत्वा ॥ शि व्या रिः  
 नवयो वनादि स म्यनी स मपिनी गदत्वा ॥ ५ ॥ नां वा प्रह्ला गुहा रिध

गिव धवी जा धना य क्षन  
 ॥ विपापि न क्षय ॥ ॥

कृ ॥ शि व्या गु न म छ

मि ज्ञे ज्ञ  
 को या त  
 म ह म द  
 ल दं



॥ दिशा ॥ कार्थगुभव निर्यासकृता अलिगुर्न वज्रसत्त्वमधिमुश्वा ॥ युष्मा  
॥ ३८ ॥ स्वादप्रसादनप्राप्तमश्नूरुनक्रियागस्माद्गुत्याहिषकंशकृ  
ननाथभूरुग्रहो ॥ ~~मिनाथा~~ ~~याध्वयधम्~~ ॥ ~~स्व~~  
ना ॥ गुर्चक्रं हं कानवास्तया प्राकृगस्त्रीनूपधून्यगा  
नननैक्षिष्यादिगदवीनूपया वज्रपद्मसंस्क्रानपूर्वकं  
समापलिंकुर्वन् ॥ ॥ ओ सर्वगथागगानूनाएगनवज्रस्वरवा  
त्मकाही ॥ गगस्वहृद्दीगमयूरवानीगलाचनादिसमापन्नवैना

॥ गुर ॥

॥ ३८ ॥



चनादिनथागगात्मनी॥ वनाचनधानधप्रवक्ष्यमहानालगधदवी  
रुयावधूत्यानिर्गच्छनाविचिन्त्य॥ वज्रमल्लासहजैस्थीनीकस्या  
द्रुष्टानामिकान्तीवज्रमर्धेप्र  
गग४ इवैस्ववाचिगारिन्नमधि  
वर्कु॥ ॥ गदन्निव्यः पृथिव्या  
असिगुन्मन्त्रवयम्॥ ॥ हरुगवनमहाक्षानवज्रयागेक  
नस्यने॥ मूडाप्रक्षधकारुद्यवज्रयागसन्नुद्वै॥ यथायूर्यमहा



॥ दिजा ॥

॥ ३६ ॥

स्मान् ४ समाधिकु नृगद्विग सैसा न पंक सैघा न मरुत हं या श्रु भन ४  
मिमि ॥ ~~ॐ निम ० न ॥ गुनृगदं न ॥ वृद्ध पुत्राय था निगै ४ ॥~~ सिका वडा ध  
ना दिहि ४ ॥ सिधु अनि न्याय था वत्स ॥ वाधि चिरु न चानृथ  
॥ ~~ॐ निम ० न ॥ गुनृगदं न ॥ वृद्ध पुत्राय था निगै ४ ॥~~ अहो महा  
सुख मिनि वद न पि वं ॥ प्र ह्य पुत्राय स्वा जन थ  
म क न द वि न्द्रु रु दान न नि व ४ य न ॥ ~~ॐ निगु द्या रि थ क विधि ४~~  
॥ ~~॥ गी न स ह ज स न न र ह ॥ ग ना ३ ॥ ध्य ष धा पुः षा सा द प्र ४~~

प्राप्तारवर्गके

॥ ग्रं ॥

॥ ३६ ॥







॥ दिक्का ॥

॥ ४० ॥

गं नमिञ्ज पन्ना सापि कुं कुमादिरि ४ सुगन्धी कुगमनस्वनममृजदक्ष  
यनिगिनिष्य ॥ ॥ प्रज्ञावदन् ॥ किं त्वमृत्सहसवत्सविन्मृडादिकरुज  
धी ॥ मक्रुक्षुक्तनथामासंस्त्रीर्षा रुक्मिणथापने ॥ पञ्चवर्ष  
समृद्धाविद्यासंरुक्मिपञ्चग ४ ॥ चूर्वनेरुगपञ्चस्यवृष्टि  
वत्सयथासुखमिति ॥ ॥ ३ ॥ पायावदन् ॥ किं शशहेनो  
सहदेवी शुक्लनक्तादिरुज्जधी ॥ काय्यारुक्मिसदास्त्रीर्षा चूर्वनेरुग  
पञ्चव ॥ ॥ प्रज्ञापूनाह ॥ भूहामदिर्यपञ्चसर्वसुखसमन्विता

॥ गुरु ॥

॥ ४० ॥



॥ यः सवति विधान न न स्या ह मय नः स्थिना ॥ कूप प्रयथा कार्यं  
 वृद्धा नाधनादिनी ॥ स्वयं महासूखाना जा अर्जुन व हिसदा स्थि नः ॥  
~~मा ज्ञ ही ॥ इति वदन् ॥~~ ॥ ~~दावना ॥~~ ॥ स्वपि स्वयं  
 म्वन मूर्ति प्रह्लाधी वदया गि नी नृपे व्याद्यही ॥ हूं सी  
 जनी गक मल कुलिषया ॥ किं ~~जन्म मही भू ॥~~ ॥ उज्जनि  
 गो वदव कुपी ग रूट कार्त्त विराव्य ॥ वाम वामा गगाना ती अय स्थन  
 का ही ॥ कानया ग ऊ न्या जिज्ञाया च भिस्तान पूर्व कं संचाल्य ॥ ॥

न विना मन



॥ दिजा ॥

॥ ४९ ॥

ॐ श्री ३ ह ४ स्वाहा ॥ ॥ ॐ सर्वं नथा गगान् नारग वज्र स्वरा वात्मका ह

॥ ~~गुणमयनावरुयम्~~ गुणपदभासगिगानन्दरुद ४ स्वहृदी जकि

नष्टाकृष्टगथागगाश्विस्थि

गापनिमिगवेनाचनलाचनाद

॥ ॥ यावन्नकुरुगयागि

वत्वाभ्यागिविक्किर्नकिमशानन्दजैसखे ॥ पणिगवाधिविरुहुसर्व

सिद्धिनिधानक ॥ मृक्किगस्कन्धविस्मनकृग ४ सिद्धिननिन्दीगा ॥ ४४

नक्षत्रीनागुनूष्माचप्रवक्षि

कवसीरुगानगिमनरुग

वाधिविक्किविसर्कुने ॥ ग

॥ गुन ॥

॥ ४९ ॥



या भूनागगणसहजानन्दनूपप्रह्लादानुच्यते ॥ ~~४४~~ निप्रह्लादा  
नरिष्यकः ॥ ~~विपाडगकाथे ॥ नगचतुर्थारिष्यकः ॥ ४४~~ दानिह्ला

नवित्साधनार्थयाथाकृविधि  
कसेवचतुर्थारिष्यकैरुल्लङ्घन

॥ नारिष्यकाहियायागीया

नागृहिर्गप्रह्लादानारिष्य  
मरिष्यकैर्नर्तवक्यं ॥

गीत्तमरिवा ॥ ४४ ॥ नि ॥ ह

न्यनमुष्टिनाकार्षिष्वचमृगनृक्षकां ॥ यइकैधूमनह्लायनवज्रि  
४सनिलनुवलाकया ॥ निमिर्गह्लायनगण्डैवाधिसत्त्वस्धीमना ॥ प्र



॥ दिङ्गा ॥ ~~ननाह~~ ॥ अरिषके विधा रिन्नमस्मिर्न प्रकाशिनं ॥ आचार्य गुण  
॥ ४२ ॥ प्रह्लाचचरुर्थ गत्सूनस्तथा ॥ ~~पुनउक्तं गुणं~~ ॥ पनमानन्दरुवप्राक्तं नि  
र्वाद्य विना गतः ॥ मध्यमान  
वर्जितः ॥ अनादिनीधने भाने  
नाकनूष्ठा रिर्न वाधिचिरुमि  
नवाक्कथानि गित्मचने ॥ अधिस्थानपदंश गत्सर्वरूपा नग्नमयं ॥ नरु  
वाय गुण क हृदयं वृजा ॥ ४२ ॥ सहजावस्था अमियनसकासक

॥ गुण ॥

॥ ४२ ॥



ही जयिकी ४१॥ नस्मात्सम्यक् सद्गुरुमाणा ~~धर्म~~ किं च ॥ ॥ अथ  
 भस्मरुत्तं जन्मसंरुत्तं जीविने च मे ॥ अथ ब्रह्मकलगा गा वृद्धपुत्रा  
 स्मिन्ना ॥ ~~किंचित्पुत्रार्थं लिख्यं~~ ॥ ॥ गदने गने नस्याः  
 प्रह्लाया ४ पाणिं लिख्यमा ॥ ॥ दत्त्वा ॥ गदयै वामकनधा  
 धत्वा सहकने निवसिदत्त्वा ॥ ॥ साजि ॥ पूर्य मन्त्र  
 समर्पितं यमस्मै मयं निगता गता सा जी कृत्य ॥ नाभ्या पायन वृद्ध  
 त्वं ब्रह्म च दैजगुयं ॥ नस्माद्विया गमन सामाकार्षित्वं कदाचन ॥

गदने गने  
 नस्याः  
 दत्त्वा  
 गदयै  
 वामकनधा  
 धत्वा  
 सहकने  
 निवसिदत्त्वा  
 साजि  
 पूर्य  
 मन्त्र  
 समर्पितं  
 यमस्मै  
 मयं  
 निगता  
 गता  
 सा  
 जी  
 कृत्य  
 नाभ्या  
 पायन  
 वृद्ध  
 त्वं  
 ब्रह्म  
 च  
 दैजगुयं  
 नस्माद्विया  
 गमन  
 सामाकार्षित्वं  
 कदाचन



॥ दिक्का ॥ ~~विपादगकार्ये ॥ ४४ दन्तसर्ववृद्धानीविद्यावर्गमनुरुनी ॥ अग्निकाम~~  
 ॥ ४३ ॥ ~~नियामरु ४ सिद्धि मस्य न नीरुमा ॥ ४४ दिवदग् ॥ विद्यावर्गदद्यात् ॥~~  
~~४४ मि विद्यावर्गदानाविधि ॥~~ ॥ गदन्मिष्येवज्ञधनरूप  
 विराय्ये ॥ ४४ दन्तसर्ववृद्धत्वं व ज्ञसत्त्वकनस्थिर्ग ॥ त्वयापि  
 हिसदाधाय्येवज्ञपादिदृष्टव ग ॥ ४४ निप० नवज्ञेयारु  
 यम् ॥ ४४ ॥ ॐ सर्वे गथागमसिद्धिवज्ञसमयनिष्ठप्रयत्नीधनया ॥ गुर्व ॥  
 मि वज्ञसत्त्वर्जां ॥ ४ ॥ हि हि हि हि हं ॥ ४४ निप० नृक्षीयार् ॥ ॥ ४३ ॥



हृत्सा नमसो वीर्यमरुशारुचल ऊर्ध्वं ॥ आदाहि अविनासि  
चक्षुन्यगावद्गमूच्यन ॥ ~~गमिवद्गमदानविधिः ॥~~ ~~गमिवद्गम~~  
~~गमने ॥ गीतवासादहिनादि~~ यथा विधिं कृत्वा कर्त्तव्यं  
मृपहनेन ॥ ~~गमिवद्गम~~ शिष्याय इष्टदत्त  
कमलैलख्यमृदामस्थाय प्रत्यर्कं पृष्टं पृष्टं च ॥  
~~गमिवद्गम~~ यान्नुयाविर्गवद्गवानाही नृपी स्वयं समन्वयं नृपी विधिं  
न्य ॥ गस्मा गस्मिन्वाद्यवी जमयुखे मानी गीह्य न देवता प्रवक्ष्य ॥



॥ दिआ ॥

॥ ४४ ॥

~~आपा नि गीग हा जार न ध गी मूडा रा वना~~ च की कु छुल

क छि नूच क भ खलारु समय था कर्म ॥ अऊर्या मि नारु न त्त स रूव

॥ व नाचना भा घ सि छि नू पान्

न सत्त्वं ग थानी गे प्र व ४ आ र्या

मूडा आर्या दि स्वरु रा वा नू व र्य

~~पे लां घे रु ग~~ आप व सि ॥ अथ रु व ध

अहं हं नू क हं रु ड् ठा किनी जाल स म्ब नं स्वाहा ॥ जिग की ॥ रु र्म ॥ ओं ३

॥ म टि नि वि वि न्य न ग र्म

दि नू प नि ध ना ३३ का दि

धि मू च्य ॥ ~~आ पा नि~~ ॥ पू

॥ गु न् ॥

॥ ४४ ॥



सर्ववृद्धता किनीयवज्रवर्धनीयवज्रवेनाचनीयहं ३रुदृ ३स्वा  
हा ॥ ~~विजर्ग~~ ॥ ~~व्याघ्रचर्म~~ ॥ ॐ धन २ धनय २ मर्द २ वज्रध्वकहं रु  
दस्वाहा ॥ ॐ वज्रवेनाचनीय हं २रुदृ स्वाहा ॥ ~~विजर्ग~~  
॥ ~~चक्राभिनसि~~ ॥ गृह्णदरुम नावीनचक्राभ्यात्म  
कं श्रीवज्रसत्त्वमूडयं वहिन ध्यात्मसीस्थिर्ग ॥ १ ॥ ॐ  
वज्रधर्मसमस्त्वं रुद्र २ भूलातिकहं रुद्रस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ४ ह ह हं २  
रुद्र ॥ ~~ध्वनिविजर्ग~~ ॥ कृष्णलक्ष्म्यक ह्युया ४ ॥ गृह्णदरुमनावीन



॥ दिजा ॥ कृद्युत्तमिगारात्मकं ॥ श्रीवज्रसत्त्व ॥ २ ॥ ॐ वज्रसूर्यगमाविधमय  
॥ ४५ ॥ समयस्त्वेनत्नाधकहंरुदस्वाहा ॥ ॐ सर्ववृद्धताकिनीयम्पादि ॥ जि  
जने ॥ कष्टिकायीवायां ॥ गृह्ण दहमनावीनकष्टिकान  
त्तसैरुवात्मकं ॥ श्रीवज्रसत्त्वम इयं ॥ ॐ भवगपनमभ  
ध्वग ॥ वृद्धहिजिनजिकहंरु दस्वाहा ॥ ॐ ह८नमजिस्वा  
हाहं वाषट् हं हं हं ही ८ रुट् २ ही ॥ जिजने ॥ नृचकद्वयकनया ॥ गृह्ण  
दहमनावीननृचकं भवगात्मकं ॥ श्रीवज्रसत्त्व ॥ १ ॥ ॐ हं हं ४५

॥ गुन ॥

॥ ४५ ॥



स्वाध्वकं हं रुद्र स्वाहा ॥ ओं वै हां यां जीं माह जीं हं हं रुद्र ॥ ~~ॐ निशि~~  
~~जर्क ॥ भस्वलाहा ॥~~ ॥ गृह्णद रुमनावीन भस्वला मा घसि ज्ञात्मकं  
॥ श्रीवज्रसत्त्व ॥ ५ ॥ ओं श्रीव जहं हं नुकन्यादि ॥ ~~ॐ नि~~  
त्रिजर्क ॥ न पुनं वं श्रुत उ मृष्ट माला स्वस्वस्थान ॥ ओं के  
नश्च वं हं रुद्र ॥ ~~ॐ निशि~~ जर्क ॥ पात्रवानकन ॥  
॥ ओं नमारुगव नवीन म्वीन धनाय न्यादि ॥ ~~ॐ निशि जर्क ॥~~ स्वहा  
गुठमन ॥ गृह्णद रुमनावीन स्वहा गुठमन पात्रक ॥ श्रीवज्रसत्त्व



अत्र गुरुं जाव्यमप्युपयने ४  
मिमेक्षत

॥ दिजा ॥ ॥ ~~दृष्टिर्वागभकर्षपगाकादिकेदद्यात् ॥~~ ॥ ~~मनामूलनैव~~  
॥ ४६ ॥ ~~जपेत् ॥ पुष्पमालामादायस्वभि न सिरङ्गीयात् ॥ पं लां चं लुग~~  
॥ ~~नमोवर्लिदद्यात् ॥ नमः ४ पुष्प~~ ~~मालामादाय ॥ भिष्यस्व~~  
~~भिष्यसिद्धिवाजपेत् ॥ पं लां चं~~ ~~लुगः ॥ नमः ४ कायपान~~  
~~खादयेत् ॥ गीतचकीकुष्ठुल ॥~~ ~~अवलनमं गीत~~  
~~हं कामरीजात् ॥ पदननृत्त ॥ ध्रुवयादिग्वलिपूजनी ॥ पं लां चं लुग~~  
~~॥ जलचवाद्य नृगयानेकानयित्वा ॥ त्वत्स्थाननिवहाय ॥ पुनप्रश्न~~

पंचधा लि व न्ते ७ अथमदे

॥ गुत् ॥  
॥ ४६ ॥



कैवल्यदद्यात् ॥ गंगा श्रद्धादिपादपुञ्जनेकात्रयित्वा लाकारेभ्यस्तु  
 निसर्गम ॥ गीगसादक्षहाय ॥ गंगामूत्रापुञ्जने ॥ दक्षिणा ॥ तुनि ॥  
 वलिविस्तृत्य ॥ वलिमूषहयन ॥ ॥ गंगिविचयैर्व्याविधि  
 ॥ ॥ गंगेन गङ्गा गङ्गा चर्या ॥ ॥ ॥ गङ्गा कर्षिकां वाममुखि  
 ददिनिधाय दक्षिणा रुचमूत्र ॥ ॥ ॥ यथाह व्याकनामि  
 त्वावज्ञसत्त्वस्तथा गङ्गा ॥ रुचदूर्जगिदुष्पभूयन्तरुवक्ष्यन्तय  
 ॥ ॥ हभूकवज्ञनामगङ्गा ॥ सिद्धासमस्तु रुचुवक्ष्य ॥



॥ दिशा ॥

॥ ४७ ॥

~~॥ निप० नूचा कर्कश कर्षा ॥~~

॥ पूष्य पातनानूत्रपमथागमन

पेक्षिव्ये ॥ यस्मै वव्याक्रियन ॥ निष्ठुञ्जी नय ॥ ~~॥ निव्याकनधविधि~~

॥ ~~॥ मदनुत्रिनिनिपात्र~~

चीवनादिकं दद्यात् ॥ ॐ शु

जधर्मचक्र ॥ ॐ वज्र हं रुम ॥

~~॥ निप० नमव्यकन ॥ ॐ~~

वज्रराघव ॥ आकान्तं अश्व

॥ वाम ॥ आदिधनं अं पूर

कं ॥ ~~आदिधनं प० न ॥ अं स्यस्वनं अं घट्टं ॥ अं स्यस्वनं प० न दत्तार्ग~~

॥ गुन ॥

~~वस्त्रावा दयम् ॥~~ ॥ आकाशलं अं सर्वमाकाशं चाप्यलं अं ॥ आ

॥ ४७ ॥



काष्ठसमनायागत्सर्वगुसमगा ~~रूपा~~ ॥ अथ प्ररुद्रिसहजचि  
त्वात्पादमात्रेण धर्मोऽखप्रवरुय ॥ आपूर्य्यहि समना च धर्मो  
खमनूरुन ॥ ~~मृतिवदेन~~ ॥ ~~चाना~~ ॥ ~~वैराग्यान्वा~~  
~~दत्वाऽप्यधिकानूरुना~~ यथाक्रमे ॥ ~~मिथ्येवाच~~  
~~नूपध्यात्वापक्षगथागगवि~~ कानिदद्यात् ॥ ॥ सर्वस  
त्विगतार्थसर्वलाकेषु सर्वे ॥ यथा विनयगां विश्वधर्मचक्रप्रव  
रुय ॥ प्रह्लापायस्वरूपात्मा चिन्नामसि निववाचकः ॥ अखिन्नवि



॥ दिक्का ॥

॥ ४८ ॥

गगासंगसत्त्वार्थकृत्सोपनी ॥ मिथर्मभान्वरथानवज्ञपन्नपत्र  
कर्मचक्रभद्वपञ्चपात्र्यचक्रपात्रेननूलावचानसवन्दित्वाव  
दन ॥ चर्वकनिष्पामियथास्त पयमिषरु ॥ न्यनरु  
नविधि ॥ गदनूधानयन भिनसिक्तुं प्रदक्षिण  
कानयन ॥ गीतसूत्रगितनीति न ॥ वेनाचननध्यात्वा  
चक्रसूत्रगमस्तनी ॥ वेनाचनस्य शिरवचानि द्वा समस्तमाहि  
गापनिधायक ॥ वेनाचनस्य स्वकचक्र ॥ चक्र ॥ १ ॥ अज्ञाय

॥ गुन ॥

॥ ४८ ॥

चर्वकनिष्पामियथास्त

गुनसिन्धुगतामिहचक्रविधि

नगपत्र



ध्यात्वा ॥ अक्रास्यस्य गिरुवचा निध अरु शकाय प्राप्स्यर्थ ॥ अ  
 क्रास्यस्य कृत्ति क्षीनी तव ज्ञ ॥ २ ॥ नत्त सीरु वध्यात्वा नत्त विमल  
 स्तानी ॥ नत्त सीरु वस्य अस्थे २ व ॥ गिरुवाचा निधस्य इ  
 खिनी सखार्थ नत्त सीरु वस्य नत्ती ॥ नत्त ॥ ३ ॥ अमि  
 गारु ध्यात्वा ॥ मिह विक्कि ठि गच्छाने अमि गारु स्य वि  
 रुवचा निधस्य ३ निलावर्ध सीरु जन्मस्थ ॥ ५ ॥ मागीनी प्रहन  
 धह गा ॥ अमि गारु स्य न कृप द्री ॥ पद्म ॥ ४ ॥ अमाघ मिद्धि



॥ दिआ ॥

॥ ४६ ॥

ध्यात्वा विष्णुवर्जं वडा पमरुनं अमा घसिद्धि उव विरुवचा निधक  
अत्रयार्थ अमा घसिद्धि ॥ विष्णुवर्जं ॥ नमः कदादि के आर्य  
स्यामने पाग यम रुनिवदन् ॥ अथ निवदिने सि  
व्ये गनु धानि रु विष्य निमह  
क्रमे वदन् ॥ अधूना मधुला चा  
॥ बुझानी वाधिसत्त्वानी वा सत्त्वानी देव गाना च सम्मग ॥ सत्त्वाना मनु  
के पार्थ विधिना मधुलै त्वया ॥ लिखी गव्यं प्रयत्न न गै जया श्रद्धा सा

गुरुया लि  
लेडि लिखे  
पिअम  
न रुतय  
॥ गुन ॥  
॥ ४६ ॥



धक॥ हृष्टा प्रविष्टा पत्रमनहस्या रुमं ठली॥ सर्वपापविनिमृक्षा  
रुवानदीवसु स्थिग॥ नरुयश्चवनन॥ शक्तियानादस्मान्महासु  
खान्॥ निवृत्तं भवदृष्टं रवन्ते अ  
रिषिक आयुष्मान् सर्ववृद्ध  
महानाज॥ स्वामिनि निश्चिने  
नास्ति शिक्षा रुके॥ मस्मात्कामविनागर्त्तं न कार्यं रुवेना पुन॥ स  
र्वकामापरुगस्तु न मत्तमाकु गारुय॥ पश्चमासासुर्गं रुजन



॥ दिजा ॥ ज्ञान्यः समयाप्यनः ॥ न हि प्राणि वधः कार्यः स्त्रिन्त्रेन पनित्यः ॥  
 ॥ ५० ॥ आचार्यः स्मनसं स्याच्चः सर्वनादनमिद्रमः ॥ नास्ति किञ्चिदकर्तव्यं  
 प्रह्लापायनचमसा ॥ मारुषी नास्ती न पापं न तथा गगन  
 वायथा ॥ ~~निरुद्धमनः~~ ॥ प्रभादवर्जस्व समयसोख  
 दैरुजध्वं ॥ जगत्तिलघुसूखेय वडासत्त्वप्रतिसनः ॥  
 नास्ती नारुवनः ॥ अपि च धर्मः ॥ व्ययथः अपि ध्वः रिषिकः ॥ प्रि  
 यपूवत्सन्नेः मनारिकल्पानार्यवसर्ववृद्धवाधिसत्त्वेः समन्वा

॥ गुण ॥  
 ॥ ५० ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

क्रियते ॥ ४० ॥ त्वात्समाधिः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 मन्त्रः ॥ भिष्यत्सर्वलोकानि धीक आत्मा ह्येवैकनिष्कामिय  
 आस्तापयति ॥ ॥ अथ भक्त  
 चम ॥ अथ ब्रह्मकृत्ता जागवद्ब्र  
 ४० निष्कामिना वेदं ग ॥ ॥ गंगा  
 दत्ति ॥ ॥ गंगा ॥ गंगा गुणवदद्यात् ॥ ॥ आगंगा कृदति धी ॥ नाना  
 कानवस्थादिनस्व ॥ नीनं विनयन ॥ नाशुलीरुमि पुर्ये चदाक्षी

यातल  
कायगु  
रआम  
मसकोने  
सीवेदठ  
ठनयाली  
पंजुप  
रवन्ने

प्रो जये मन्त्रि  
य मी जमी मल

धन ठा को लिने मेरु ले लथि ले लके लिने की तने सगने छये मोत्रा वीसी फेले ये आसि इ  
 वाज मंगल नथी ले मंगल लथि मज न चेत पुजा युग समे पञ्च सालि लहाय गित माल  
 बाहि कल्या गुल छे ये समया चक्र विमर्जन संहार पञ्च सालि लहाय मंगल पाल वहाय  
 समया चक्र ~~मंगल लथि मज न चेत पुजा युग समे पञ्च सालि लहाय~~ गित कोय ले वी साग रुनि त्य मंगल लथि मज न चेत पुजा युग समे पञ्च सालि लहाय



॥ दिजा ॥

॥ ५१ ॥

दासं न थापये ॥ हस्त्यसाधनधान्यादिकाश्च नेमस्तिमवच ॥ दं गुति

समय ॥ आशिर्वादिचिन्मपूजा ॥ निदिजाविधिसमाक्रम ॥

अचलयासथकाभापाग

वः गीग अवनिनिहिगवाम

विष्णुकाजदिनसमधुल

इष्टानिपनिपीठिगाधनवलाघानाट्टासापने ॥ उद्गामाभि

वीनाजिदजिष्टकर्नेपाक्षाकसव्यगर्ने ॥ वन्दे श्रीवनचन्दनीय

यवपनसंज्ञापयानावि

जान् ॥ ॥ रत्नाक ॥

गगाहं कानवीजाइवा ॥

॥ गुन ॥

॥ ५१ ॥



धमहाक्रोठं मृदाहं सदा॥

रिष्यकहामादिस्वारिकैचक्रत्वागधचक्रपूर्वकैमधुलैविठार्ज

यत्॥ दिग्वर्तिदद्यात्॥ पत्नी

~~मार्घ्यदद्यात्॥~~ ॐ श्रीहंस्क

दानपत्रं॥ महामृजसिद्धि

हा॥ ॥ नमः॥

~~रिष्यकविधिमाह॥~~

॥ नमो भिष्यन्मधुलैप्रतिक्षाम

~~घंरुग॥ नमः॥ चक्रार्ज~~

रुद्राचक्रचक्रकमलाय

कामनार्थं भूय प्रतिक्रिया

॥ ॐ नमः॥ श्रीवज्रवानाक्षे॥ ~~भूयसि॥ इना~~

॥ आदौ गुन्मधुलैकृत्वा यथाविधिवत्



॥ दि आ ॥

॥ ५२ ॥

वीचकं विधिवत्संप्रत्ययि ससाधिः कल ४३ मा मकि साधने दवना

स्त्रिवासनादिका नयगु ॥

॥ नदनूप्रक्या या क्षिनसि नूनमाना

हयगु ॥ श्रीसमनस्य मर्तुप

० नाचार्यस्य क्षिनसि पूर्य

दव्या मर्तुचापि प० न प्रक्या

या क्षिनसि पूर्य दत्वा ॥ रा

वना ॥ यालु या वि मा वज्रवा

नाहिरूपां स्वयं सन्वनन

पैविचिन्त्य ॥ गस्मा रुस्मिन्वाक्कवीजमयुखेनानिर्नास्त्यनदेव

॥ युन ॥

गा प्रदेष्ट ॥ अः वाः नीः ॥ गी गहा अरुनहा ॥ गमा मूद्रा रावना

॥ ५२ ॥



॥ चक्रिकु छुलक धी नृचक भखलारु ऋयथाक्रमे अ जीर्यामि  
मारुनत्तसम्भुव वंभाचनाभाघसिद्धि नृपा मदि निविचिन्त्य नृरु

नसत्वं न थनी गै प्र व ष्य जीर्या  
डा अ जीर्यादिस्ररावा प्र व त्य

दिपनिधनी ष्यकादिमू  
धिमुच्यः ॥ ~~भापा नी~~ ॥

पला पलुग ॥ ~~जापवति~~ ॥

॥ ~~अथ रुस्व~~ ॥ गीत

~~धन~~ ॥ ॐ श्रीवद्ग हं हं नृक हं हं रुद्र अकिनी जालसंभवनं स्वाहा

॥ ~~मिथिज फी~~ ॥ ~~रुम~~ ॥ ॐ ३ सर्ववद्ग अकिनी य वद्ग वद्ग नीयव



॥ दिशा ॥ ज व ना च नी य हं ३ रु द् ३ स्वा हा ॥ ~~नि यि ज फं ॥ व्या यु च र्म ॥~~ ॥

॥ य ३ ॥ ओ ध न २ धा न य २ म ह् २ व ज ध क हं रु द् स्वा हा ॥ ओ व ज व ना च नी

य हं २ रु द् स्वा हा ॥ ~~नि यि ज~~ के ॥ च कि ॥ ~~मि न सि ॥ गृ द्~~

द रु म ना वी न च कि भू आ र्था त्म के ॥ श्री व ज स त्व व हि ध्वा

त्म क स स्मि ने ॥ १ ॥ ओ व ज ध र्म स म य स्वी रु त् २ आ

ला तिक हं रु द् स्वा हा ॥ ओं किं ह ह हं रु द् ॥ ~~नि यि ज फं ॥ कृ धु~~

त द्व यै क र्ह्या ४ ॥ गृ द् द रु म ना वी न कृ धु ला मि गा रा वा त्म

॥ गु व ॥

॥ य ३ ॥



कै॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ २ ॥ श्रीवज्रसूर्य नमो विधमय समयस्वेनत्त  
कहं रुद्र स्वाहा॥ ओं ३ सर्ववृद्धताकिनीय॥ ~~ॐ नि विजयं~~॥

॥ कलि॥ शिवायी॥ गृद्धदरु मनीवीनकधीनत्तसंरु  
वात्मकै॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ ३ ॥ श्रीं ॐ स्व न प न म ॐ स्व न  
वज्रहि जि न जि क हं रुद्र स्वा हा॥ श्रीं ह न म हि स्वा हा हं  
हं ही रुद्र २ हं॥ ~~ॐ नि विजयं~~॥ ॥ नृचक छया ४ क न या ४ ॥

गृद्धदरु मनीवीन नृचकै ॐ स्व नात्मकै॥ श्रीवज्र॥ ४ ॥ श्रीं हं श्रीं



॥ दिजा ॥ ४ प्रह्लाध क हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ वं हां यां जीं मां ऊं जीं हं २ रुद्र २ स्वा  
 ॥ ५४ ॥ हा ॥ ~~मृगिगिगपी~~ मखला ॥ ~~मृग~~ ॥ गृह दलु मना वीन मखला  
 माघ सिध्मात्मक ॥ श्रीवज्रस त्व ॥ ५ ॥ ॐ श्रीवज्र हं हं  
 नृनृक हं रुद्रादि ॥ श्री ॥ ~~मृग~~ ॥ नोपनव प्रसूयं मृध  
 माला ४ ॥ ॥ ॐ कन २ प्रच ६ हं रुद्र ~~मृगिगिगपी~~ धपा  
 ५ ॥ ॥ ॐ नमो रुगवर्ग स्वादि ॥ मृध ~~धस्वदा~~ र्ज उमन ॥ ॥  
 गृह दलु मना वीन खदा र्ज उमन पात्रक ॥ ॥ श्रीवज्रस त्व ॥

॥ गुरु ॥  
 ॥ ५४ ॥



खडा जे उमरु पावु दृष्टि वा गम कर्षु पला कादिके दद्यात् ॥ ॥

एक भूखादिके गीति काय ग्रीवा वस्त्रे वदद्यात् ॥ ॥ ~~ममात्रे नमः~~

~~जयेत् ॥ पुष्पमालादाय ॥~~

~~सुग ॥~~ ॥ नमो मन्त्रिणि ॥

हीत्वा वहिर्नागकृत् ॥ ॥

॥ ~~आदि ॥~~ ॐ नमः श्रीपद्मनृत्पद्मनाय २ ॥ ॐ नमः श्रीच

क्रमस्वनाय ॥ यस्य वक्त्रा ध्रुवर्षु यहनवीक्षितं ललाटं कामरु

~~सिन्धुधनयन् ॥ पलाय~~

~~पद्मना जने च ॥ कर्णग~~

~~ममायमनिका वलिदश~~



॥ दिङ्गा ॥ ॐ श्रीं आम्बदिङ्गुक्क वा उं प्रहृतिनगगर्धंगच्छुल्लक्ष्मीं ॥ मङ्गा गल्ल  
 ॥ यय ॥ लन्दवन्दारुवसनिनसागर्वगा छुर्वीवाहस्ताहृक्क य पा न नवरुग  
 वन ४ पद्मनृत्यध्वनस्य ॥ भू पिच ॥ यासासंसा न च कुवि  
 नचयनिमन ४ स नि योग म मह ना ४ सा धिर्य्य प्रसादा  
 द्वि ४ कु नि कु उर्वस्वामिना नि प्र पक्ष ४ ग च प्रयात्मव  
 र्धं समुदयनि सूर्य कल्पना जाल मृक्का कुर्या न स्या द्य पद्म भिनसि  
 विनय सङ्गु न सर्व काली ॥ ॐ नम ४ श्री पद्मनृत्यध्वनाय २ ॥ ॐ नम

॥ गुन ॥  
 ॥ यय ॥



४ श्रीचक्रसंस्काराय ॥ श्रीगविष्णुसनां नमः ॥ ६५ ॥ नमस्तु  
हं नमामिहं नमानमाहं स्वाहा ॥ किश्चि कल्पपेनियहाय ह  
वयसाय वद्धय ह गत्याग सहस्रां मित्रचिन्तयाप  
दप्रपागाप ॥ ६६ ॥ सत्य थगिप्रवृद्धमिथ्यचिरं  
व्यतीतनैरा विर्व्यामद यात्मकं वनगुर्वंदमदा  
सर्वदा ॥ ॥ श्रीग ॥ ॥ नमस्तु ॥ गमाचमनिका विसर्ज ॥ ॥ पा  
दार्ध्वगर्जनं ॥ नमः ॥ ॥ नृत्य ॥ ॥ ६७ ॥ किश्चि कल्पयादि ॥ गी

॥ नमस्तु हं नमामिहं स्वादि ॥ १ ॥



॥ दिक्षा ॥ ~~न च महिमधुल~~ ॥ ~~क~~ ॥ यावन्तः ॥ ॥ गीत ॥ ~~प्रभादिन~~ ॥  
 ॥ यद् ॥ ~~कानृष्यनाक्रम्य~~ ॥ ॥ गंगा क्षिप्यापि गुन्मधुलं कानयन ॥ वलिदा  
 नैव ॥ ॥ ~~रावना~~ ॥ क्षिप्यं व  
 छि ॥ क्षिप्यं वक्ष्यं चक्रपद्मस  
 ॥ नक्त ॥ ॐ कानक्षुक्ल नमिहि  
 ॥ ~~अपानि~~ ॥ ~~पंचगव्य~~ ॥ ~~लाक्ष्मि नञा~~ ॥ ॥ गंगानन्दमधुलं कृत्वा  
 नृवदया ॥ ~~पुगमा~~ ~~बुला~~ ~~विकैदशान~~ ॥ ॥ ॐ वक्ष उष्ट्रपहं ॥

॥ गुन ॥  
 ॥ यद् ॥



~~मि ना वरु~~ ॥ ~~ॐ चक्रवन्धन मानय हं~~ ॥ ~~चक्रवन्धन~~ ॥ ~~गग~~  
~~श्याय विनति धानयी ता~~ ॥ ~~उत्कार न शो मय न~~ ॥ ~~ॐ आ ख~~ ॥  
ना हं हं रुद्र ॥ ॐ आ श खी न हं ॥ ~~मि प ० न य म नि~~  
कायां पृच्छं ग ॥ कस्त्वं ग स्रव न प्रिय मि ॥ ~~सि ध्या पि~~  
वदं ग ॥ ~~सु व ल ग हं महा स्रव~~ मि ॥ ~~गि न सि व जै हं~~  
त्वा ॥ ॐ सर्व या ग चि रु मू त्या द या मि ॥ ग न ॥ म द न ॥ लि द न  
॥ ॐ सु न न स म य स्त्वे हा ॥ सि धि व डी य था स्र व नि मि ॥ ~~ह दि व जै~~



॥ दिशा ॥ ~~धृवा~~ ॥ अथर्व वज्र वा नाशा अधिष्ठि गारु विध्य न च त्वय देव ज  
 ॥ ५७ ॥ वा नाशा ॥ म प्र न ह स्य म धु ल प्र वि द्या य व क्त्वा न च वृ ष्णा न वृ ॥  
 ॥ ॐ ख लु अ ना ह हं ३ रु र ॥ ॐ आ ४ ख वी न हं ॥ ४४  
 नि प ० ना क व्य य म नि कार य न न प्र वि ॥ ॥ ॐ म  
 हा सून ग दृ रु स ग व्या स र वा भ व ज स त्वा य सि ष्य मा  
 ॥ ४४ नि प ० न प्र द क्रि ष य गं क गा ३ लि च रु द त क म ल म ध्व  
 सी स्था य्य ॥ प च प्र धा मं का न य र ॥ ॐ व ज्र ठा क पू जा प स्था ना

॥ गुत्र ॥  
 ॥ ५७ ॥

५१ मा ३३ ४१ ला लि या ज जो व के



यात्मानं निर्व्यामयामि सर्वं तथा गतं वदतां का धिष्ठमां ॥ न  
॥ ॐ सर्वं तथा गतं वदतां क प्रज्ञा पस्त्रायामान निर्व्याम  
यामि सर्वं तथा गतं वदतां का धिष्ठमां ॥ सर्वं ॥ ॐ  
सर्वं तथा गतं ॥ ॐ ॥ ॐ सर्वं तथा गतं क प्रज्ञा पस्त्रायामान निर्व्याम  
व्यामि सर्वं तथा गतं न तत्र तां का धिष्ठमां ॥  
दक्षिण ॥ ॥ ॐ सर्वं तथा गतं पद्म तां क प्रज्ञा पस्त्रायामान  
त्मानं निर्व्यामयामि सर्वं तथा गतं पद्म तां का धिष्ठमां ॥ ॐ



॥ दिङ्गा ॥

॥ ५८ ॥

~~विम~~ ॥ ॐ सर्वगगनविष्वक्कपूजापस्त्रनायात्मानन्नि  
र्यान्कयामिसर्वगगनविष्वक्काधिममी ॥ उरुच ॥ ॐ  
गुनूचन ॥ पस्त्रनायात्मानं निर्यान्कयामिसर्वस  
त्तपनिशा ॥ र्थवज्रवन्दना कभामि ॥ पूर्व ॥ ८ ॥ भू  
यत्तवज्रवानाहिकूलप्रवि हस्तदन्तवज्रज्ञानम्  
त्तादयामियनस्तननत्तवज्रवानायासिद्धिनपिप्राप्स्यमिक्कि  
मगान्यासिद्धिः ॥ नचत्तयेदं नहृदमधुलेस्पृशनीवकृष्यम

ठ नमस्तु मां  
लिखेदपि ३८  
पुनरस्यवा  
पितृहय ४

॥ गुनू ॥

॥ ५८ ॥



न समयाप्यथ नि॥ ~~॥ सिनाधि व क धृत्वा॥~~ अयन्त समयाव  
 क मूर्झा नीरूपा न यद्यदित्व मिर्मकस्य चिन कृया न॥ ~~॥ दानि~~  
~~॥ धृत्वा॥~~ वज्रसत्त्वस्वः यं न यद्ददय समवस्ति न॥  
 निरिंश न कृधं जाया यदि कृयादिर्ममयं ~~॥ नम~~  
~~॥ वज्रानामाकि मू विदया~~ मो॥ ६४ दन्ते नानक वा निस  
 पाणि कुमादहन॥ समयं न कृधं सिद्धिः पिव जान्मृगादकैक  
 नृ गत्त्वया कर्तुं व्यन चत्त्वया ह मव मी गव्या मा न विमाप निहाय

मो॥ ६४  
 ११ मे



॥ दिग्जा ॥

॥ ५६ ॥

॥ ४ ॥ ~~॥ नमः शिवाय ॥~~ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥  
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥  
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥  
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥  
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥  
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥  
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥  
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥

॥ गुत् ॥

॥ ५६ ॥



जलचलत्पगाका दया के धनार नीलानीलमधुलचडनकआ  
४कानं विराय स्वहृदी जनमिहिरिहिरुकाय वाग्जानीय यथाक  
मैगलराव वृहं ह४ आका नक्षत्राव्यपादद्वयान  
धस्मावायुमधुलादीपिगनं पविधगनरुकावृक्षस्त्र  
नक्तिनक्षानलमधुलस्त्रन नकमे४कानक्षत्रातिप्रमा  
नीभिष्यमे४काननस्मिसमहं ४पादधुविनप्रविष्टे४हंकानादिन  
नक्षत्रिहिरुपूर्यमानैसमस्तानीनैध्मायाग॥धुपाऊयप्रन४स



ता स्तोत्र आचमनकुपठने

॥ दिजा ॥ ~~नैव द्वावा न येन~~ ॥ ~~ॐ आवक्ष्मा नरु यन न न चान य २ रुह~~  
॥ ६० ॥ ४ आमे ॥ ~~गी न न मोह ४ ॥ ४ मि प न भ न धा मा व रू ये न ॥~~ ॥ कृ ग वि  
स्यादि ॥ ~~हं ह ४ आमे ४ मूर्ति वि~~ मर्क धा भिन सि व जं धृत्वा ॥  
४ स्या व क्ष वि वि ४ ॥ ॥ ग ना म धु ला रि मूर्ख भि र्भ्यं च  
अ य रू की दृ ४ ५ रु व नि पृष्ठ ॥ ग इ क ४ सि न पी ग न क  
रु क्क व रू मे ४ य थ क र्म ॥ ४ नि पृ स्ति व क्ष रि चान सि धि रा व्य ग  
म स्य रू त्वा ॥ ए व र्मे गु ष्ट द्व य स व ज द शि ध क न ध गृ हि त्वा दी पं व ड

॥ गुन ॥

॥ ६० ॥







॥ दिजा ॥

॥ ६१ ॥

ददयात् ॥ नमस्तुते मनसा प्रवर्धिरुगवनिक्षिपसि पूष्यं नो कारयन्

॥ ॐ शो गिष्ट वज्र हृत्ता मेरुवक्षः क्षमा मेरुवक्षदयमभिनिष्ठ

सर्वसिद्धिप्रयत्नकुरु हह

हह ही ॥ आ ॥ खं वी न हं प्र

निकु कुरु मां गतिनाथ ही ॥

॥ ॐ नमो ॥ ॐ भिसिष्ठि उच्छिष्टे वा

पूष्यं पतंगि महामुद्रासिद्धि

लाचनमुखवामनसिद्धि ॥

॥ उरुमाता उरुमासिद्धि ॥ मध्यमा मध्यमसिद्धि ॥ अर्धमाता

॥ गुप्त ॥

अर्धत्वमासिद्धि ॥ विन्वस्यामि इन्द्रचिनाम्समिपञ्चसिद्धि ॥

॥ ६१ ॥



॥ दवगानानुसकियेस्मानका सा दिविन्दुदगास्मान्मर्थे दयादिवन  
यावत्यननये पुष्ये पननिमदायस्यासने पुष्ये पननिमस्यन  
कुलेरुवनि ॥ समन्तरुयसि  
न पुनः ४ जिपधानयये याव  
उसिद्धिः ४ वाञ्छवर्तुलनेखा  
नास्ति सिद्धिः ४ मधुलेचास्पदक्षयन ॥ मन्त्रजापादिराव्यगामा  
पाद्यप्रसावान्ननसप्रवक्षनीयः ४ सान्धपटनगृह्य ॥ नगस्त



॥ दिक्का ॥ व्यंग्रहिना ॥ ॥ ॐ प्रमिगृकृत्वेमिमं वत्समहावत्समिप० न०

॥ ६२ ॥ सिष्यस्यमिनसिवन्धियागु ॥ ॥ मिमालाहियकविधि४ ॥ ॥

गदनरुक्मचदसिष्यस्याधिप मिमालाहियकविधि४ ॥ ॥

सक्षात् ॐ द्वये विराग्य ॥ वज्र सत्वस्वयेत्येव च कृत्

द्याननमस्यन४ ॥ उद्यानय मिमालाहियकविधि४ ॥ ॥

रुने ॥ ॐ क्लानचक्रहृ ॥ ४ स्वाहा ॥ ॥ मिप० न० न्धपटमपनयेत्

॥ ॥ हवर्जपल्लव्युक्ता देवगानामकथनमधुनाधिपमि

॥ गुन ॥

॥ ६२ ॥



मानसं सर्वदर्शयित्वा ॥ प्रप्यादिरि ४ सप्रशुदकिर्धामपयन ॥

॥ ७४४ दन्तमधुलपस्थन ॥ अश्वावेत्यनसौ प्रणि ४ चंचवृद्धकल

आमा मूडामन्त्रेन विष्टिग ४

॥ संपदासर्वसिद्धिनासया

ग्रुविष्टसि ४ वज्रपद्माय

लनिर्गमन्त्रध्वनाधर्नक

व ॥ ७४४ निपथित्वा ॥ ॥ वज्रम

धुलमहामधुलप्रविष्ट

हं ४ यागमधुलमहामधुलदर्शिताहं ॥ गुह्यमधुलमहामधु

लदिजिन्त १ हं ४ हाहाहा ॥ ७४४ निपा ० यन ॥ ७४४ निमधुलप्रवर्त



दिशा ॥  
६३ ॥

महामहेश्वर उवाच

विधिः ॥ गदनूदकारिण्यकार्यं गुणवदक्षिणादत्वाऽस्वस्मि  
कापनिष्कृतिष्या गुणमधुनकानयित्वा गुणमध्वययुः ॥  
वाधिवज्रधवज्जानीयथादक्ष  
नाथयिखवजाश्रीददाहिभा ॥  
लिखितास्तदकमलापनिच  
सपत्निकैवजधननृपैविरुग्य ॥ भाषा नी ॥  
हानिभजा ॥ गदनूदस्वदक्षीममयुर्वेनानिगीविग्वर्हिनस्तथागना

महामहेश्वरमापिशरा

॥ लावना ॥ गगानक्ष

इसूर्य उपविध्यक्षिष्य

॥ चिकित्सायाधिष्ठान ॥

॥ गुण ॥

॥ ६३ ॥



जाति कलागयागुडा विमो वापु

निषादवीशसंप्रसूतिषरिषकार्थ॥ बुद्धानामरिषकंरुज  
गजाधमयवज्रिधम॥ गुधमकनीयथादरुल्लथाददध्वमस्यहि॥  
~~मिगमथायास्यर्थ॥~~ नरु  
महानालगधउविरुयवनी  
वज्रमार्गधनिर्गस्यगडवैद  
व्यमदिमि धून्यगानकनरु वज्रजानसप्रज्ञाकोर्यनूपज्ञानसत्वा  
रिन्नमरिन्नमरिषिषधपुनरुजमूखादिमूर्तिरि॥ पप्रानि॥



॥ दिङ्गा ॥ सूर्यगगनपूर्यस्त्रिगैर्लौचिनादिविद्यासहि ६४० यधजपनाकाव  
॥ ६४ ॥ म्बुवादिग्रहीगनूर्यकैकुमादिवृष्टिरिः कनिकिसलवर्जिगवाधिरि  
रामृगपूर्यक्षीगकललोर्मै शिष्येपशानिः ४८० ममलि  
विच्यमानेनूपवजादिदवीरि ४८० शिष्येभुञ्जैरुटिकर्मका  
क्षीनिर्मलेध्यात्वा ॥ ॥ शिष्ये ॥ सभिनसिकलक्षीधत्वा ॥  
॥ यन्मर्जैलैसकलसत्तद्वदिस्त्रिगस्यसर्वात्मकस्यवलधर्मैकु  
लाविपस्यनिस्थेषदाषनहीगस्यमहासूत्रस्यगन्मैगलीरुवहु

॥ गुत्र ॥

॥ ६४ ॥



न पवनमातिथिक ४॥ लक्ष्मीधनकाचनपवनवमालेखिलीकना  
थलिमलप्रदिष्टाविवृद्धाम्बुजपवननयंरुक्मंगलीरुव  
दुर्ग ४॥ नितिकनगवाद्य ॥ ननी पदिष्ट ४ प्रवनस्त्वकय  
४ रव्यागलिनीकननदवपु ४ धम्मरुम ४ ४॥ निति  
कनप्रज्ञानो गन्मर्गलेखवदु ४ नितिकनगवाद्य ४॥  
सद्धर्मपूजा ४ शुभमर्मलाय ४ संधानृदवास्तनदजिनीय ४ य  
४ श्रीनिवास ४ प्रवनी गधमनी गन्मंगलीरुवदु ४ नितिकनकवा



॥ दिजा ॥

॥ ६५ ॥

यः ॥ ~~मिगमथयामकल~~ ~~दकैरुाकै~~ २ दद्यात् ॥ ॥ गद

नृभिष्यस्मभिनसिपद्रुगं नृभिष्यस्मगदकैदद्यात्

॥ ॥ गगाहं ३ ४ हं कानाधि

हृदीजनध्वनीगह्वानसत्वेकी

मिनमसव्यकवगृहिगवा

पञ्चववर्जागुलितलिगनगस्वराववर्जा ॥ ॥ ॐ महासुखव

सत्त्वालियकैद्यत्वामलिषिश्ममिसर्वगथागगाधिपत्वंदठारुव

धिर्गैवजजागाक्रास्यस

रुर्गैदृष्टासंप्रष्ट ॥ गस

धिविस्त्रामृर्गैवपधस

॥ गुन ॥

॥ ६५ ॥



पान्नमो गान्धर्व कर्मणः

कर्मणः

ॐ अरिष्य के महावर्द्ध उधु कनमस्क मे ॥ ददामि सर्ववृद्धानां  
गुणालय सर्व ॥ ॐ आ ४ वडादकारिषिधर नगस्व मह ॥ ६४  
~~मिम ० नाहि वि ४३ ॥ ६४ ॥~~ काकि ॥ धक ४ ॥ ॥ गदने  
सिद्धनीजनेललाट भिनसिम  
इयो मूडयग ॥ कर्ण परका  
लादी के ॥ ॥ गग ४ प्रथ के प र्ण प्र द ह ह ने व था दिके स्थापयग ॥  
मिथ्यापिगुन मधुल प्रि समाधि माम कि द व गा धि वासनै य था वि

ॐ लोहवर्ण तद्वत् कर्मणः  
वगुणा लोहवर्ण तद्वत् कर्मणः

गान्धर्व गान्धर्व गान्धर्व

वृत्तिकर्मणः  
मिथ्यापिगुन  
लोहवर्ण  
मिथ्यापिगुन  
लोहवर्ण  
मिथ्यापिगुन  
लोहवर्ण  
मिथ्यापिगुन  
लोहवर्ण



वा ॥ एकेपुत्रागित इह भुजकुलिधुन नमो भवतु का हि पुत्रा  
या मुस्तगानमुवाहिहि के प्रा नमस्तय ॥ उवाताया खक  
ने वष्यं ठाविष पात्रस दोमुव्यं ठावि वं ही मस्त मोत्रव  
नय चद्रत यत नात्राति यान केद

॥ दिक्षा ॥

॥ ६६ ॥

धिकुर्यात् ॥ ~~सवना~~ ॥ ~~धूप~~ ॥ ~~नीनी~~ ॥ ~~स्नान~~ ॥ ~~पूजा~~ ॥ ~~पेला~~ ॥ ~~घं~~ ॥ ~~सु~~ ॥

॥ ~~पी~~ ॥ ~~भ~~ ॥ ~~दि~~ ॥ ~~पूजा~~ ॥ ~~सु~~ ॥ ~~मि~~ ॥ ~~रु~~ ॥ ~~ना~~ ॥ ~~रि~~ ॥ ~~ध~~ ॥ ~~क~~ ॥ ~~च~~ ॥ ~~मा~~ ॥ ~~स~~ ॥ ~~म~~ ॥ ~~य~~ ॥ ॥ ७ ॥ उशा

ना गलचक्रमांश्नितधूमांवि

दिगयां त्रिलाकमहिगापीयू

नसाविनाविकल्लथास्वानन्द

नध्मविनहि कावानाहिकापागव

गगाकायादि वध्म वृगां प्रहाला हलन हला मृगसवां सुआ

इकगा रास्वनां दग्धानि

खधाना प्रगा ॥ वृद्धज्ञान

सन्दीहनां रावा राव विचा

निर्माणा निदिन भम धुल

मृगसवां सुआ

॥ गुत्र ॥

॥ ६६ ॥



कुसुमापमा॥ विद्यावृद्धाकदम्बकंदहमियाचक्रयथारुदनी  
सानन्दाललिगार्मगस्त्रुवगवावानाहिकौचमसि॥ ॥ ७ ॥ चछा  
लिकनलीलया निजपदाइ लालिगविष्णुविष्णु  
विमहासर्वविनचयलीन सुवाधदया॥ अम्हाजा  
यगगापिनिर्वृतिपदप्रोभा विधनजयानागडागच्य  
गदयेचसहजानन्दायवन्दामह॥ ॥ ७ ॥ उक्तसम्बनाष्टसिद्ध  
नाचार्यकृष्णपादेर्मर्मकटिर्कानामाधवाक्कथानिगवासन्दा

रु

रुजसद



॥ रिआ

॥ ६७ ॥

नाकाना नालवनि ॥ हत्वनूपलपिही कानेवा नाही ॥ ६४ ॥ वकी हिं गै ॥

गुनक ॥ धना विधान नोका धर्म प्रकाशिता ॥ संसाधन पान गलुन

वडा सखन दक्षिण ॥ कश्चि

नविना नोका पाने प्राप्ता

मनहि ॥ गु ॥ दोसर्व ॥ प्र प्र

पिना गुन रुव पान ग ॥

॥ ॥ दगुलिसमये ॥ आशि

वैद ॥ चूर्ध्वक नय हटा

बलि विसर्जन ॥ मनीषा मादिकी कुर्यात् ॥

॥ ॥ ॐ नमः ॥ श्री वडा देव

॥ गुन

॥ वैश्वानल लला स्पृश काय ॥ स्नापनायाय ॥ उपाध्या नैव जाय ॥

॥ ६८ ॥



य॥ ~~॥ स्वना॥~~ स्वराव शुआ सर्वधर्मा धीं स्वराव शुआ इहं  
६५ न्यगीह्य नवडा स्वराव पनमह्य नमयं निह्य राव पनम स्वम  
रावं अमकं म्य पाप प्रहं नव  
॥ ६५ न्यगा क नू धा हि नैवाधि  
ननभि मयं धि नमं वराव  
मिनआ ~~॥ स्वना नवा राव कं ॥ पंचगजः पंचमन नव भूजनं ॥~~  
~~अह्य नप नो दि ॥ भूधमहन ॥ अइआ लपन ॥ उंच अवन~~

वक्षिनसिनी नै चिन्मयं  
चिन्मात्मकं वनं ॥ स्वनपह्य  
यं ॥ ~~भाः पाः नी ॥ लीन~~



॥ दिजा ॥

॥ ६८ ॥

नमानय २३॥ ~~पञ्चरक्षा~~ ~~लिनक~~ ॥ ७४ देन नानक वा पिण्यादि ॥ सि  
~~इनस्वानमानागध~~ ॥ कस्वीश सूनग प्रिय ननापिव कृष्य ॥ सुरग  
हं महासूरवगि पात्रक्षिनसग या अलिध कमहावड्या  
दि ॥ ~~यथा~~ ~~हि~~ ~~या~~ ~~दि~~ ॥ पात्रगाम क ॥ ~~वज्र~~ ~~चिध~~ ॥ अनादिनी  
धर्नरुत्वा वडासत्वमहानग समनरुड सर्वात्मावजा  
मर्तापिसर्मस ॥ ~~घ~~ ~~वि~~ ~~य~~ ॥ गृहीता सिमयारुगवन ७४ न्यादि ॥ च  
क ववर्ष नूतल के दत्ता नाथ ददस्वम ॥ चक्र देवना या सत्त्व आचा

॥ गुन ॥

॥ ६८ ॥



य्यैश्वर्यपनिष्क्रमः॥ समये सर्वबुद्धानां समवर्तगुह्यमुरुर्म॥ आ  
चार्यस्यान्यहं नाथ सर्वसत्ताथका न धाम॥ अहो महासूखमि  
नि॥ ~~नृप्यादिपूजा॥ नृप्यन्मा~~ ~~॥ पैलां च सुग॥ दक्षार्जुनं~~  
~~विर्यजाप॥~~ ॐ अग्नये चाक्षु  
~~॥ यधर्मासहं नय॥ पैलां घे~~  
~~वरुसहाल॥ इति॥ अग्नये ॐ श्रीं हं रुद्र॥ द्याउत्तान॥ क्षरापग~~  
~~मनु॥~~ ॥ ॐ अग्नये चाक्षु नृप्यादि॥ ~~मीनवाला ॥ धनिनिन~~



॥ दिजा ॥

॥ ६६ ॥

~~जाळा उा पदळा उा स्वस्तिवाक् पदय ॥~~

॥ अनना दुव्य गवन्नि

~~श्यादि ॥ स्वस्तिवाक्कादियथा निमिरुं याह यं ॥~~

॥ शिनाहृमिक

~~स्वाहा ॥ धनस्यावजि रजका~~

~~धन्यं पृथुं शय ॥ सन~~

~~पागसधमधिपं चांशुभादिग~~

~~स्येयं ॥ पंतां धं सुग ॥~~

~~जन ॥ ॥ सियरुदा ॥ गगठक~~

~~माविदजा ॥ शिष्याधिवा~~

~~सन ॥ पृथुं सुगि ॥ दजिधा ॥ यथाविधिं कुर्यात् ॥~~

~~॥ स्वमाकोक~~

॥ गुन ॥

~~॥ ॥ मिदिजाविधानमात्र ॥ ॥ रुम् ॥~~

~~॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥~~

॥ ६६ ॥

कोपगुरुदेवैर्न दलपुत्राया चक्रे निमीनादि



# गुनप्रज्ञा

|                              |    |
|------------------------------|----|
| देव्याद्यः प्रज्ञासंकल्पे    | १  |
| गुनमधुलपचगव्यसिद्ध           |    |
| गर्थ                         | २  |
| आदिप्रज्ञा                   | ३  |
| कौजलसाधन                     | ४  |
| आदिग्रहयज्ञ                  | ५  |
| श्रिसमाधि                    | ६  |
| कलभादिप्रज्ञा                | ७  |
| दवप्रज्ञा                    | ८  |
| वनिविद्य                     | ९  |
| वाक्प्रज्ञा                  | १० |
| माज्ञानेतिव्यलसय             | ११ |
| गुनमधुलदेकमगप्रज्ञा          | १२ |
| पञ्चगव्यविद्य                | १३ |
| शिव्यज्ञावना                 | १४ |
| नित्ताग्निमन्त्राग्निनञ्जापथ |    |
| धकातिनेनत्रवाथकप्रज्ञाया     |    |
| य                            | १६ |



नत्तम छुल पाखकन — १  
 अख्यवना — १५  
 नत्तम छुल दीरुलप — १६  
 गुनुपाद पूजा — २०  
 थडी २ थसगय — २१  
 हावना — २२  
 खं ठान्ना मीजनजा पयासी — २३  
 सीरुलप — २४  
 वडी थिये — २५  
 कलधले — खीनाय —  
 मछुलथि — भकिगभस  
 गाङ्गन — <sup>गमवुइदा २६</sup>  
 चिरु पूजा दगुसमय अङ्काकु — २७  
 समय गधचक्र धूमां भनि — २८  
 गधचक्र ममाल — २९

॥ ४४ मिगन पूजा ॥

॥ अख्मि विग सुद्ध ॥  
 पादार्घ्यास्यगुनम छुले १



पंचगव्यसिद्धयर्थ — २  
 मंडलधीन — ३  
 शिखमाधि — ४  
 कलशसगुननागपद्मपूजा — ५  
 अर्घ्यपाशमंडलप्रणिमापूजा — ६  
 बलिविधि — ७  
 मातृग्रीवशिव्यलस्य — ८  
 गुग्गुलुमूलद्वयकविमर्जन — ९  
 दावना — १०  
 शिख्याधिवासन — ११  
 पंचगव्यविधि — १२  
 लोकेश्वरमंडलस्य — १३  
 स्वानवायकपूजा — १४  
 ब्रह्मधर्मसंघमूलसंस्नान  
 विधिपूजा — १५  
 शकन — १६  
 विसर्जन — १७  
 ब्रह्मकर्मिक — १८  
 विष्णुपूजा — १९  
 किन्नरशिवविधि — २०



॥ दिजा ॥  
॥ ७९ ॥

॥ ४ ॥

पुनः प्रजा — २०  
क्षिप्य विपालीयार्ककाय — २१  
धनीलि असक्त न स इहाधीन — २२  
लिचास्ये गुन्मसु लक्ष्म — २३  
पंचगव्यसिद्धय — २४  
पाशप्रजा — २५  
पंचसालिप्रजा — २६  
द्वयप्रतिपादप्रजा — २७  
अजनसा — धन — २८  
आदिसम — ध — २९  
नालप्रजा — ३०  
मैतृलपि — ध — ३१  
नालकाय — ३२  
माशायधन — ३३  
नदिनमस्त्वान — ३४  
विमर्जन — ३५  
मैतृलचक्रमाधिविजितमा — ३६  
वि — ३७  
कलभमामकिआदिप्रजा — ३८  
उपाध्वानेकिनधप्रजा — ३९

॥ पुनः ॥  
॥ ७९ ॥



किं न दत्तायि द व पृजा — ३६  
 मं उल पृजा किं न पृजा — ४०  
 अम न व लि पृजा — ४१  
 पीठादि पृजा — ४२  
 पं चा प चा न पृजा — ४३  
 म गा डा — ४४  
 गु न या उ स्त्री न रु प्र लि प्र य स  
 न व स्त्री नि य — ४५  
 गु न उ या अ मा ज्ञा स ऋ पि ना व  
 य अ स्ति प्र गया आ ह्य  
 म स चा न — ४६  
 गु न म छु ले व लि वि य छु  
 य क दान म छु ले द न का रु द्या  
 उ का रु कि कृ ष रू प्र जा — ४७  
 शि ष्य क र्थ य सा — ४८  
 गु न म छु ले दे क — ४९  
 ख क ने — ५०  
 म छु स वि स र्ज न — ५१  
 न द्रा स्त्री कृ क र्ण व ना — ५२  
 ख क ने — ५३



॥ ६ ॥ दिजा ॥

शिवना — ५५  
पाद्यादिनिर्लाजन — ५६  
सैखलेखराय — ५७  
त्रिकायसधनननिकसीकृकय  
द्र्याशनमगकन — ५८  
माशानेमिरापिकाग कडगयन ६०  
दन्ककासुअपिन्वाके — ६१  
ब्रगकादजदामैउलसगानके ६२  
कलभलेख नैकुतुवाके ६३  
द्राउकोड किमिष्यया  
क्राद्रिदास्ये माथ्याथ्या  
नालाहागसक्राके — ६४  
थथथामेगय — ६५  
रकने — ६६  
कहाहिविथ — ६७  
मलकने — ६८  
सिहिलय — ६९  
शिष्यपिथनकाय — ७०  
अस्यननसइहाशन — ७१

॥ ७ ॥ ७ ॥



मछुलथिते — ७७  
 किरन — ७८  
 सभाजन — ७९  
 वेगपूजा — ८०  
 दगुसमथवाकनहिथ <sup>का</sup> ७८  
 समयगधचक्रधर्मागनीगध  
 चक्रसुम्बाल — ७९

## इविथसुन

जापीक्य ध सुनयागुअष्टमि  
 वरुयामी डलविसर्जने — १  
 सुमिचयककाय — २  
 शीकाडीने — ३  
 अरुयननस आदिभूतसायध  
 अरुयननस पादाघर्गनमैछु  
 लआदिपुजा



|                            |           |
|----------------------------|-----------|
| उपाध्वाने आगभा पूजा        | ६         |
| आगीवाक्यायक स्तोत्र        | ७         |
| आदिकाय                     | ८         |
| मधुलघिम                    | ९         |
| गालकाय                     | १०        |
| माशाप्रवक्ष                | ११        |
| नदिनमस्मान                 | १२        |
| सैवर्धनचक्रसमाधि           | १३        |
| कलभआ                       | दिपूजा-१४ |
| दवपूजा                     | १५        |
| मंडलपूजा                   | १६        |
| पीठादिपूजा                 | १७        |
| चक्रैश्वनीमाशानिष्क्रियापु |           |
| ष्यसुदीति                  | १८        |
| चक्रैश्वनीयागथागतचिद्विपू  | १९        |
| माशायामुष्यमूटिगिःसिद्धय   | २०        |
| कैश्वनपकमृगकोखागमप्रति     |           |
| विम्वकन                    | २१        |
| वृषकन                      | २२        |



|                         |              |
|-------------------------|--------------|
| मरुकेन                  | २३           |
| स्वीमानामडलप्रदकिधादा   |              |
| रखने                    | २४           |
| मात्राआर्वेक्ष          | २५           |
| मायासहितमधुलप्रदकिधादा  |              |
| मायाआर्वेक्षलिकाय       | २७           |
| वृद्धकन                 | २८           |
| मायाआर्वेक्ष            | २९           |
| पिहाशया                 |              |
| गुन्मधुल                | आधुमसचाने ३० |
| लिख्यपिन                | विसर्जन ३१   |
| देक                     | गुन्मधुल     |
| विसर्जन                 | ३२           |
| फलक्षयालीखनस्येरीखलीखने | ३३           |
| हाथ                     | ३४           |
| रावना                   | ३५           |
| निर्माजनआहामिनका        | ३६           |
| पंचगव्यविय              | ३७           |
| नत्नमधुलदीहसप           | ३८           |



|                 |    |
|-----------------|----|
| गुनपादाय        | ३५ |
| प्रिकायाविष्टान | ३० |
| भिष्यसिद्धकाय   | ३१ |
| मूलनेरुके       | ३२ |
| सिधोवस्तुविष    | ३३ |
| नानधग्वा        | ३४ |
| ग्वाग्वा        | ३५ |
| उठान            | ३६ |
| गुनन्यने        | ३७ |
| कलाभा           | ३८ |
| एकने            | ३९ |
| भिनभावकौ        | ४० |
| मदनभालिनके      | ४१ |
| वडीनगलसविष      | ४२ |
| षकने            | ४३ |
| गमलिकापे        | ४४ |
| मधुलप्रदजिष्ठा  | ४५ |
| गुननृष्यविषाडु  | ४६ |
| नागमात्राया     | ४७ |
| भिनकाय          | ४८ |



|                               |            |
|-------------------------------|------------|
| खकने                          | ५८         |
| घट्टास्ये मालस वक्षथीय        | ५८         |
| खकने                          | ६०         |
| नृगलस वक्षीथिय                | ६१         |
| खकने                          | ६२         |
| कोपाननके                      | ६३         |
| खकने                          | ६४         |
| काषपानुघानके                  | ६५         |
| आषे भलावना                    | ६६         |
| दुहाडीना                      | नालका ६७   |
| नृस्यनभा                      | ६८         |
| मरुकेनेप                      | चवेरुने ६९ |
| मिष्यमलुलप्रदजिध              | ७०         |
| पृथ्याकन                      | ७१         |
| अन्धपगनलिकाय                  | ७२         |
| मलुलयाखकने                    | ७३         |
| खानशफोयाखकने                  | ७४         |
| यथगुस्वानविय                  | ७५         |
| मिष्यपिके स्वक्तिनाम्ने भारीख |            |
| निरुय                         | ७६         |



|                    |              |
|--------------------|--------------|
| गुनमधुलदैक विसर्जन | — ७७         |
| अध्वपनाकावना       | — ७८         |
| कलभाहिरिक          | — ७९         |
| मकटाहिरिक          | — ८०         |
| सिक्काय            | — ८१         |
| पटाहिरिक           | — ८२         |
| रावेनाधिवलखकाय     | — ८३         |
| बडाहिरिक           | — ८४         |
| घट्टाहिरिक         | — ८५         |
| नामाहिरिक          | — ८६         |
| जिसमय              | आर्त्तिगण ८७ |
| घट्टासम            | य — ८८       |
| मलुदान             | — ८९         |
| अङ्गनाहिरिक        | — ९०         |
| दर्शनाहिरिक        | — ९१         |
| भनकेव              | — ९२         |
| विवापिगकाय         | — ९३         |
| पाङ्गकीगनमधुल      | — ९४         |
| अध्वपन             | — ९५         |

गङ्गाहिरिक गीत सहजस

गीत ९६



प्रह्लादानातिरिक्त — ८१  
 गुनीभिष्यस्तु प्रह्लादलक्ष्य ८८  
 अन्धपगनलिक्षाय — ८९  
 मधुलविसर्जन — १००  
 विषाडकाय — १०१  
 विद्यावृत्तं गुनीप्रह्लादलक्ष्याभि  
 ननापलाकावद्वीथि — १०२  
 सिरुलयेसाकृत्थ — १०३  
 वज्रवृत्तवद्वीथी — १०४  
 महेशजन. गीतवासाद — १०५  
 हि — १०५  
 चर्यावृत्तना मन्त्राप्रज्ञा — १०६  
 गीतलक्षणवध — १०६  
 मन्त्राधिकगीतधनधन — १०७  
 रुक्मवृथर्क — १०८  
 क्षिप्रपिंसकसिनीस्वामाजीना  
 खत्वीगजीनाग्रपक्षमायाना  
 खत्वीगभिपदिकास्वामाकी  
 खाय —  
 गुम्फनीधूपधर्ष्यारव — १०९  
 पंचोपचोनप्रज्ञा अख्यमनसदिग्वलि ११०



॥ दि जा ॥  
७८॥

॥ १४ ॥

मात्राश्रावण — १११  
क्षिप्यपनिष्ठनक गाँक — ११२  
मलनृभ्य चक्रो कृछुष — ११३  
सद्यप्रजागीग कडाभसकनज ११४  
खाजकृपालहियगी नत्रिहदा ११५  
समाजन आवधदिके — ११६  
मडाकोगेगीग सादधहाय ११७  
मडाप्रजायाक दडाध स्तुति ११८  
खालवलि  
रथभगत  
मलनको  
गोदेपाङ्गचिनाह दयदिकाज  
डोअरयस्मैव्याकधु माय १२१  
क्षिप्यपिग स्किरलिकापिछु  
पाज कवा यवस्तु विप सैखवि  
य प्रस्तक विप घछ विप स्वक  
न — १२२  
रावना रवकने — १२३  
कृष्णकृष्ण लेख सैकिं — १२४  
गुननृभ्यगीग सुप्रदिमदिग १२५

॥ ७८ ॥  
॥ १४ ॥



किं डीने स क समने कि ग न स्त  
 गा आ शु म से वं द ना या ना छु व  
 कटि के गु नै छु नै ल डी का बा छ  
 य गु न न म स्का न या य — १२६  
 थ थ आ से ग य र व क न — १२७  
 भि ख्य पि मि उ न स्वे म छु ल  
 प्र द डि ए गी न नी डी डु व — १२८  
 गु न् आ शु म स चो न — १२९  
 सि ख्य क र्थ र्थ त य सि र्दु ल य १३०  
 र व क न द ह पञ्च त य १३१  
 द डि ए म या र व क न — १३२  
 भ र्थ य न स इ हा डी न १३३  
 म छु ल थि से कि न न स्तु कि चि  
 रु व डी ग को द डि ए — १३४  
 द गु स म य आ लि ग ह ध भि  
 व्य पि छो य वा हि क स्मी गु न् छ  
 य स म या च क वि स र्द ह — १३५  
 म छु ल गे क ल ह भ य म ड — १३६



॥ दिङ्गा ॥  
॥ ७७ ॥  
॥ ५० ॥

सदान गीत धामिलदाय - १३०  
कल्यानगुन किनेय विराज  
दधान के भिष्यसय गीत कोठ  
मर्वेभ महुलप्रद किधायय १३८  
डासदाय — १३८

विज्ञायां यद्युत्तरं आद्यमसंशोधने १४०  
 छिद्यमसंगद्यः दधपयः गद्यचक्र  
 गीतः काव्यनयसिद्धिः यः कलसु  
 यः

४४

五世

इविप्रदक्षिण

मांसाहु किं जीनी प्रहर्ष कलश  
नस्य स्थाना १  
लिनाम्भी गुन्म ह्यस पंचगव्य  
सिद्ध गव्य पंचाहु प्रजा २  
वसि पाद प्रजा कजल सोधन  
आदि याद धन मछल विष्ट

॥ गुरु ॥  
॥ ७७ ॥



ताललाये नमस्कान — ३  
 नागमालागीत विष्वसनीन  
 ह. आदि मांसाहृति शालीमा  
 को प्रजा —  
 वृद्धसालिग्रहक — ५  
 क्रमानि प्रजा विव्याधिवामन ह  
 मछुलधिले वृद्ध सगाड  
 न. क्रमायन विसर्जन सद्येन  
 य. चिरुप्रजा दकि धा दिगुस  
 मधेखास्मे  
 प्रजायाय  
 मयाचैक  
 क्रमानि  
 वाहिस  
 (अथाह)

विसर्जन अहं (अथ मडसे  
 दान कलधलकाय वृद्ध  
 कृण विकलधयादधानपद्र  
 रा श्रिनदिका जोनक — ६  
 गद्यचक्रगीतकाधन — ८  
 ४४ मिड विष्ट हर्ष



॥ दि० ॥  
॥ ७ ॥

॥ १८ ॥

समिभुनरुचुर्थि-१

॥ सीक्षा इविययुन ॥

निर्मानकल ॥ भालाकल ॥  
सिद्धाप अस्थिषिक विमाका  
स्थपनायाय लिचास्य गुर  
मधुल पंचगव्य नहस्य म  
धुल प्रजा षट्थागिनी प्रजा  
कंसपात्र गय ॥ ४ ॥  
नवलिनंदा वलि प्रजा  
मधुल मीक स्म सिद्ध  
य प्रमिपाद प्रजा कंजनसाध  
न आगीवी प्रजा आदिक्कास्य  
आगंवीक्कायक ॥ ५ ॥  
आदिअ हयग मधुल थिले  
लंख वलिक्काये ॥ ४ ॥ नाय प्रजा २  
वदवानाहिद गुयाय ३  
कले ॥ प्रजा मधुल प्रजा देव

॥ ७ ॥  
॥ १८ ॥



पूजा म छुल पूजा चाक पूजा ४

छुम स माधि सह की जन कने

क ऊ य म डा पूजा — ५

म डी गि य घ छ थ मी म छुल

व द कि छ म् स्था न माली डा म्

ठान ख ने स्था न थ मी कू य — ६

धू जा ना हाने घ छ थ म् मी म छु

ल प्र द कि छ म् स्व चा प प न क ने

म र के न

काल ला य

मू छू छू

॥ — ७

क म निका

प न मा डा आ

व ध

थ क र्सी पूजा रु की न के पि हा व

न ग म र्क धो वि य न म स्का न ना

ग माला वी ध्य स नी नू ह छ म क

गी ग ह न मिल रु म निका वि

स र्जन गु न पा दा र्घ — ८

धिम क नूरु य गु न नूरु य नी रु य

म हि म छुल धिम क प्र मो दि ने



॥ दि आ ॥  
७८ ॥

॥ २० ॥

क्षमक शिष्य कथर्थ गथ गुनम  
हुल मग पुजा विसर्जन राव  
ना लोहाग्नीन जा पेचगर्ब न  
नेम हुल दीहलप रावना पे  
चगन्धनाद्रिकायाधिष्ठान पुग  
मीवृलने गानन गथ सिद्ध  
य शिनेवल्लु गथ पात्रम उवच  
गालनस्मे विथ अधपनन गथ १०  
उभानया स्मे चाउयके  
गमकुगस्मे दभयनग  
नीननेक स्वेश सम  
यदान लोसुयके माउस रवद  
नीथिय गमकुलिकाय — ११  
माज्ञानीसाला डोपल दधुसगथ  
पथप्रधाम कोषपानन के ख  
कन कोषपान धोन के खकने  
शिष्यथिथिमथिय के गथ  
भावैशस्वीगथ आगवीकाना

७८ ॥  
७९ ॥



कीकयागु इ हा डीना लक्षाथ  
 गीगनभाह  
 मरुकेने अर्ये गनसड गथने  
 पुष्यपागन महुल याखकने  
 स्वानइ कीयाखकने थडीशु  
 स्वानविद्य पनिक्रम पलेचीया  
 आसीखनीलासी गय मंदले  
 रुचाचीया सी हा रोवायके  
 अरुखना

महुलवि  
 ना लोहागि  
 ना धमलोक  
 क उदकाठिथक सिद्धकाय  
 कैजले पुष्य मूर्धागिके  
 सर्जनराव  
 नडाखव  
 लक्ष्मरिष

थापिग्व उ महुपागा धूपदह  
 कथमा पप्रराडन उमनगय  
 गकि गस्येस्थपना कल्यानगु  
 थाकालियाय पुजा सैकल्पया  
 स्मी गुन महुल सिद्ध गय आ  
 दिप्रज्ञा प्रदिपादप्रज्ञा कइनसा



॥ २२ ॥  
॥ दि जा ॥  
॥ न ॥

धन आदिकाय महुल थिलकि  
 नने वडावानाहि दि गुयाके—  
 जाप जागस मलु दानवी स एम  
 न मग थापि पूजा देव पूजा गीत  
 निर्मानादि चाक्र पूजा महुल थि  
 लकि नने सगी माहनी क्वाय गुन  
 प्रमुरवे च गपूजा देगु समय थि  
 व्य आ वेष सद्य पूजा गीत दीरु  
 क आ कूल हि गीत छि दंडा थि  
 व्य आव  
 पात्र स  
 थिय के घट्ट स म य वि रुद्रा मा  
 या स्व कने थनी लि पात्र स ग या हा  
 अनू विसर्जन स काऊन ऊ मा प  
 न वलि थाय गुन नै रवदा र्ज थि  
 न स थिय पूष्य म्दा गीत स्वा मा  
 वलि नय  
 पी च धा ना हा य के पी र्ज ४ म रु क  
 गीत म ड ख क न स ला रु कि य रु

५ अना ना या स्व  
 कने ६

॥ २३ ॥  
॥ दि जा ॥  
॥ न ॥



कथञ्चप्यपलपि गुत्तमछुल  
 आदिसमय मछुलथिलसमा  
 धि कलसादि पृजा अमिस्काप  
 न मासकि पृजा देव पृजा आ  
 हकि वेस्वानन पृजा आगिनी  
 गाल्लाये

मीसाहु किर्पचधाना गी गका  
 लाङ वेस्वानन इयं पीच भाली  
 लहि यं पल नृय गी ग हाजा  
 रुनद्य द अपशुक  
 मानिपृजा शिष्याधि

वासन  
 शिष्याहु कि सिद्धै लय मछुल  
 थिले लु कि ग्वा ज्वये इ द्युग  
 पृद्धो होमन जा आशिर्बोद  
 स एमन चिरु पृजा दजि धाद  
 गुसमय क्कास्ये कुमानी पृजा रु  
 य मछुल स शल  
 द गुसमय कुमानी प्रसाद मोह



॥ २४ ॥  
॥ ८९ ॥  
॥ दि जा ॥

नी वाहि गीत च कि कुछुल सम  
या चक्र मय प्रक्ष्व विसर्जन मे  
दान जी गिनी पनी गु स्वी मनुक  
क्षीम व निग य ग छु ग स्वी मा जा  
प्रवक्ष ध मून कि ने वय प्र जो न के गु  
नक्षय गीत द्व विनी च ले प कि  
दी ग स्वया इहा डी न नाग भ्म क  
आ शु म स चो न स गा जन म डा की  
रं गीत सी द क्ष मा जा या गु स्वन  
को का य द लि न रा य क ल रु य  
गु न स म य भिष्य पि मे  
गु न या ग स गु ध वि  
द क्ष प य ग ध च क्र गीत रा स्व  
न

वशा चार्थ्ये ३

भु भ स म्ब त १० ५२ साल मा  
न कुषा न यो द सि बुध वारु  
नु त छे वा हा ल या लु ध दर्शन ह  
ध या गु दि क्षा वि धान स फु स  
प्र रो या ना दिन जू लो शुभ स ०

राजा लाल ना कि न मा रा म रें त ह त गु ह म इ ल प र सा ल भा त पु रा सि रु त य द्ये  
म र ल लु रा मो र गि स त त व्या के वि त रं न भा रि का य स मा दि पा व क्ता त रा ध  
म र त ठा रि क्ता को स क ल पु रा गी त द्ये न का री की ना डि पि ठ पु रा दि गा कि र्ता  
रिषा त क म त क्ता के र क्ता ता म के क म त त दि ले के म र ध र ह दि व रा न क र्ता कि य

॥ ५९ ॥  
॥ ५९ ॥



उद्यानामलचक्राः॥ हसिष्यपि धूमपनमध्वनवज्जवानाहीश्वर  
गर्धिल्लाधसानातिचक्रैथहाशया नीर्माधचक्रैविद्यानाचास्त्र  
अनीलवृणा॥ वायुयावर्गैथाहा विद्यानाचास्त्र॥ विद्युक्कना  
राधना॥ पल्लवासाकुयुगुर्न जगत्थचाशयासकीगुप  
माधीवज्जश्यागाश्वमान शयावीद्यानाचास्त्र॥ दग्ध  
विशिरुया॥ स्वर्गमध्वपागालदग्धमानशयकाचास्त्र॥ त्रिलोकमही  
गा स्वर्गमध्वपागालया मोक्षयकाचास्त्र॥ पीयूषधनाल्लगास्वर्ग



मधपागाल भृमृगधनाहायकाचांस्त्र ॥ बुद्धज्ञाननसा बुद्धपिनीगुरु  
ननसगयाचांस्त्र ॥ वीलावीषलूया दक्षपापरूकावीजानाचांस्त्र ॥ स्वान  
दसंदोहना थथथमनेआन दशयाचांस्त्र ॥ रावीराववी  
चानधमविनहिगा रावभूराव शनीगुवीचायानाचांस्त्र ॥ वा  
माहिकीपारुव ॥ थथिंजाअवडवानाहि मिसकसिनेनआजपाथ ॥ नी  
मानाविदिनसमंतलगगा ॥ हक्षिथ्यपिं हानेथपनमध्वनवडवाना  
हिशयूगथीअलाधसा नाहीचकैथहाशया नीमोशचकैवीशाना



सूर्यमधुलया उ न विद्याना चीं ॥ कात्यादिव ॥ अकाना  
दि ककाना दि आखलं चाउला चीं ॥ प्रज्ञाता कलन कला मि  
थं कायका न ॥ मी पिकया विद्या ना चीं ॥ अमृतसवा ॥ वा  
धिचिं नामृग कल ॥ यागु अमृ गस्त्रानयाना चीं ॥ सुक्ष  
माकुसुमा पमा ॥ पत्रम ॥ नवद्वानाही गथ्य चीं ॥  
धामा टधी कलं स्वर्गम ॥ पागा लकासा ची धी कलं पल ॥ याउ  
त्वाज्ञाय वल सुका गयी चि विथ्य ची कि धी कश्या ची ॥ विद्या ब्रह्म कदम्ब



क॥ वृद्धपिनी गूवी शायारानी शयाची ॥ दह मिरुया ॥ स्वर्गमल्लप  
गात्रवयागुनस्मीपी कयादग्धमान शय काची ॥ चक्रु या रुदनी  
॥ कायचक्रवाकचक्रची रुचक्र रुदमदयाची ॥ सानेद  
ललिताधका ॥ थथथमने आ नन्दशयासुमिशयाची  
रूनगवी ॥ प्रकाशमान शयाची ॥ वानाहिकी चमसि ॥ थथिजा प्रवज  
वानाहिरवधका किमिसंशियीकी ॥ ॥ चछुअलि ॥ नालिचक्रं थह  
शायानी माधचक्रयादेवने धमदियाविद्यानाची ॥ केनलिनया ॥ ३



सालया कीर्त्तु स्वर्गमध्य पागाल से जा जो लयमान रूप का ची॥ निरु  
पदा॥ गा छुव पठु कया वी शाना ची॥ इला लिगा॥ थन इ अन इ ध का सु  
नी नै था कयी काय मरु या ची॥ विरु रु॥ थ सी सा न व्या  
फ मान रु या ची॥ विरु रु नी॥ ध म्मा दि यी था हा वि शाना  
ची॥ महा सु र्व॥ सकल सत्त्व प्रा  
वि शाना ची॥ वी न च यी॥ थ व ले नि र्म्य इ उ ब ल नि र्म्य इ ध का सु ना नै था क  
यी था का य मरु॥ नी ली॥ थ सी सा न रु कि सी नी ल म रु ध म्म सी नी ल म



शु.पापसंनीलमशु॥स्वर्वाशुदया॥थथथमनसिकाकार्यमागुश्रान  
उभयानाविश्रानाची॥अम्बाजाग्रगगापि॥च्याहइगुलाहिगारुद  
लकमलधयागुपलस्वीयादेव नविश्रानाची॥नीर्वि  
पदप्राना॥धर्मसामेसकल याननिर्माद्यपदवीयावि  
श्रानाची॥विधर्मजया॥थस्यालवज्जवानाहियागजे॥नागभडाग  
॥नागयाकेनागवज्जशुपुगु॥च्युग॥थदीगुलिंरूकाविश्रानाची  
॥अद्वय॥निष्क्रमइरूकश्रयाविश्रानाची॥गथनिष्क्रमइ



आ३

कृष्णश्याविद्यानाचां प्रलाभसा ॥ श्रीहनुकधामां धरु पनमधनव  
जवानाही वजवानाहि धामां धरु पनमधन ॥ वजवानाहि श्यावि  
द्यानाचां प्र ॥ सहनंदाय ॥ सह  
नाचां प्र ॥ वन्दामह ॥ धर्षिन्वा  
कसिनं नमस्कान ॥ ॐ ॥

ज्ञानन्दस्वरूपश्याविद्या  
प्रवजवानाहियागमीस  
॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥







अनेनापुष्पतवं हि स्तुतवहिप्रतापसाधवता हि जीनस्तु पुष्पास्वामिक प्ररु॥ यन्नृत्त  
अनस्तु पुष्पावाजिपजापति ॥ वल्लसक मह अन विष्वायु महावला॥ कामदेव हविचेव चन्द्र  
सूर्या तथाग्रहा॥ पृथ्वीपालार्धधी एवेव कूबनकूतस्तथा॥ धर्मजाता च नागाश्च गन्धर्वास्तु न कि  
न्तना ॥ प्रयतिंश्च स्थिता दवा अकतिस्तु निवासीन ॥ महानातास्तितायचपरीमाशवश्च वरुण ॥  
नीर्माशचतिदवाश्च शुद्धावासाश्च यस्तीता ॥ मालिची लोकधातुसहधातुनिवासिक ॥  
चतुर्द्विपि स्थिता सत्वा स्थितायच श्रीधातुकं एतानसत्त्वलोकाश्च लतागुल्म रूतादय ॥ मू  
दिताहूमि स्थितायच विमलाया मूपागत ॥ अश्वीष्मितिनिश्चाच अचलाया कृपावद ॥ धर्मम  
घातूगयचः सुदुर्जया गताश्चय ॥ दुर्गमा निवासाच प्रहाकनी निवासिन ॥ अहिमुखि स्थि  
तायच साधुमति निवासि ॥ २२ मरुमि श्वरी नाथ आर्या साग महापूत ॥ यिताहाम विधात नञ्  
सर्वगृहर्मभुल ॥ स्वमिवाः



24. 1. 1862

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

118/1. ۱۵۴۳

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय

ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ ਪ੍ਰਸਿਦਿਪਤਿ

1818-1819-1820-1821-1822-1823-1824-1825-1826-1827-1828-1829-1830-1831-1832-1833-1834-1835-1836-1837-1838-1839-1840-1841-1842-1843-1844-1845-1846-1847-1848-1849-1850-1851-1852-1853-1854-1855-1856-1857-1858-1859-1860-1861-1862-1863-1864-1865-1866-1867-1868-1869-1870-1871-1872-1873-1874-1875-1876-1877-1878-1879-1880-1881-1882-1883-1884-1885-1886-1887-1888-1889-1890-1891-1892-1893-1894-1895-1896-1897-1898-1899-1900-1901-1902-1903-1904-1905-1906-1907-1908-1909-1910-1911-1912-1913-1914-1915-1916-1917-1918-1919-1920-1921-1922-1923-1924-1925-1926-1927-1928-1929-1930-1931-1932-1933-1934-1935-1936-1937-1938-1939-1940-1941-1942-1943-1944-1945-1946-1947-1948-1949-1950-1951-1952-1953-1954-1955-1956-1957-1958-1959-1960-1961-1962-1963-1964-1965-1966-1967-1968-1969-1970-1971-1972-1973-1974-1975-1976-1977-1978-1979-1980-1981-1982-1983-1984-1985-1986-1987-1988-1989-1990-1991-1992-1993-1994-1995-1996-1997-1998-1999-2000-2001-2002-2003-2004-2005-2006-2007-2008-2009-2010-2011-2012-2013-2014-2015-2016-2017-2018-2019-2020-2021-2022-2023-2024-2025-2026-2027-2028-2029-2030-2031-2032-2033-2034-2035-2036-2037-2038-2039-2040-2041-2042-2043-2044-2045-2046-2047-2048-2049-2050-2051-2052-2053-2054-2055-2056-2057-2058-2059-2060-2061-2062-2063-2064-2065-2066-2067-2068-2069-2070-2071-2072-2073-2074-2075-2076-2077-2078-2079-2080-2081-2082-2083-2084-2085-2086-2087-2088-2089-2090-2091-2092-2093-2094-2095-2096-2097-2098-2099-2100-2101-2102-2103-2104-2105-2106-2107-2108-2109-2110-2111-2112-2113-2114-2115-2116-2117-2118-2119-2120-2121-2122-2123-2124-2125-2126-2127-2128-2129-2130-2131-2132-2133-2134-2135-2136-2137-2138-2139-2140-2141-2142-2143-2144-2145-2146-2147-2148-2149-2150-2151-2152-2153-2154-2155-2156-2157-2158-2159-2160-2161-2162-2163-2164-2165-2166-2167-2168-2169-2170-2171-2172-2173-2174-2175-2176-2177-2178-2179-2180-2181-2182-2183-2184-2185-2186-2187-2188-2189-2190-2191-2192-2193-2194-2195-2196-2197-2198-2199-2200-2201-2202-2203-2204-2205-2206-2207-2208-2209-2210-2211-2212-2213-2214-2215-2216-2217-2218-2219-2220-2221-2222-2223-2224-2225-2226-2227-2228-2229-2230-2231-2232-2233-2234-2235-2236-2237-2238-2239-2240-2241-2242-2243-2244-2245-2246-2247-2248-2249-2250-2251-2252-2253-2254-2255-2256-2257-2258-2259-2260-2261-2262-2263-2264-2265-2266-2267-2268-2269-2270-2271-2272-2273-2274-2275-2276-2277-2278-2279-2280-2281-2282-2283-2284-2285-2286-2287-2288-2289-2290-2291-2292-2293-2294-2295-2296-2297-2298-2299-2300-2301-2302-2303-2304-2305-2306-2307-2308-2309-2310-2311-2312-2313-2314-2315-2316-2317-2318-2319-2320-2321-2322-2323-2324-2325-2326-2327-2328-2329-2330-2331-2332-2333-2334-2335-2336-2337-2338-2339-2340-2341-2342-2343-2344-2345-2346-2347-2348-2349-2350-2351-2352-2353-2354-2355-2356-2357-2358-2359-2360-2361-2362-2363-2364-2365-2366-2367-2368-2369-2370-2371-2372-2373-2374-2375-2376-2377-2378-2379-2380-2381-2382-2383-2384-2385-2386-2387-2388-2389-2390-2391-2392-2393-2394-2395-2396-2397-2398-2399-2400-2401-2402-2403-2404-2405-2406-2407-2408-2409-2410-2411-2412-2413-2414-2415-2416-2417-2418-2419-2420-2421-2422-2423-2424-2425-2426-2427-2428-2429-2430-2431-2432-2433-2434-2435-2436-2437-2438-2439-2440-2441-2442-2443-2444-2445-2446-2447-2448-2449-2450-2451-2452-2453-2454-2455-2456-2457-2458-2459-2460-2461-2462-2463-2464-2465-2466-2467-2468-2469-2470-2471-2472-2473-2474-2475-2476-2477-2478-2479-2480-2481-2482-2483-2484-2485-2486-2487-2488-2489-2490-2491-2492-2493-2494-2495-2496-2497-2498-2499-2500-2501-2502-2503-2504-2505-2506-2507-2508-2509-2510-2511-2512-2513-2514-2515-2516-2517-2518-2519-2520-2521-2522-2523-2524-2525-2526-2527-2528-2529-2530-2531-2532-2533-2534-2535-2536-2537-2538-2539-2540-2541-2542-2543-2544-2545-2546-2547-2548-2549-2550-2551-2552-2553-2554-2555-2556-2557-2558-2559-2560-2561-2562-2563-2564-2565-2566-2567-2568-2569-2570-2571-2572-2573-2574-2575-2576-2577-2578-2579-2580-2581-2582-2583-2584-2585-2586-2587-2588-2589-2590-2591-2592-2593-2594-2595-2596-2597-2598-2599-2600-2601-2602-2603-2604-2605-2606-2607-2608-2609-2610-2611-2612-2613-2614-2615-2616-2617-2618-2619-2620-2621-2622-2623-2624-2625-2626-2627-2628-2629-2630-2631-2632-2633-2634-2635-2636



A close-up of a piece of aged, yellowed paper with faint, illegible markings. The paper has a textured, slightly mottled appearance with some darker spots and a horizontal crease. Faint, dark, scribbled lines are visible across the surface, possibly remnants of handwriting or a stamp.

~~Now~~ This Baab Banglish to  
Bodha karon horish

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३१ ॥

W. J. ...  
K. J. ...  
K. J. ...  
K. J. ...

Katmandu  
/ trip on the Lasso



अथ भरुकाथि

321